पूरे हालात

शाह मदार

जफर उद्दीन खाँ बुक सेलर

Rs. 25/-

डयोढ़ी बेगम, आगरा

یہ کتاب MadaariMedia.Com سے ڈاؤنلوڈ کی گئی ہے

دم مدار
بیڑا پار
MADAARI MEDIA
The Silsila e Aaliya Madaariya Social Platform

سلسلۂ مداریہ کے بزرگوں کی سیرت و سوانح
سلسلۂ عالیہ مداریہ سے متعلق کتابیں
سلسلۂ مداریہ کے علماء کے مضامین تحریرات
سلسلۂ مداریہ کے شعراء اکرام کے کلام

حاصل کرنے کے لئے اس ویب سائیٹ پر جائیے

www.MadaariMedia.com

@MadaariMedia

@MadaariMedia

@MadaariMedia

@MadaariMedia

Authority : Ghulam Farid Haidari Madaari

७८६

पूरे हालात

शाह मदार

इस किताब में हजरत शाहबदीउद्दीन के हालात जिन्दगी व करामात व मन्फूज़ात अनोखे अन्दाज में दर्ज किए गए हैं।

अज:—डा० जहुरुल हसन शारिब

नाशिर:—जफ़रउद्दीन बुकसेलर्स
ड्योढ़ी बेगम, आगरा

یہ کتاب MadaariMedia.Com سے ڈاؤنلوڈ کی گئی ہے

जुमला हुकुक मुसन्निफ महफूज़ हैं

मुफ़स्सल हालात व सवाने हयात हज़रत सैय्यद बदीउद्दीन मदार रह०

अज—डा० ज़हुरूल हसन शरिब
एम. ए. एल. एल. बी. पी. एच. डी.
(सज्जादा नशीन)

हज़रत मखदूम समाउद्दीन सैहरवर्दी
महरोली, नई दिल्ली

हज़रत गुदड़ी शाह बाबा रह०
(अजमेर शरीफ)
बानी सदर

दी सोसाइटी ऑफ मिस्टिक्स
बनिए डायरेक्टर

शरिब इन्स्टीट्यूट ऑफ इसलामिक लेटीचर
दी ओरियन्टल रीवल रेलेर्च इन्स्टीट्यूट
शरिब हाउस
झालरा अजमेर शरीफ

६ जुलाई, १९८७

"दिबाचा"

एक मुद्दत से मेरी यह ख़्वाहिश थी कि हज़रत सैय्यद बदीउद्दीन शाह रह० मदार पर एक किताब लिखकर अपना नज़रानए ख़ुलूस व अक़ीदत हज़रत शाह मदार रह० पर पेश करूँ व हम दो लिल्लाह आज मेरी वह देरीना आरज़ू पूरी हुई।

मैं बचपन में हजरत शाह मदार रह० के मुताअल्लिक सुना करता था लेकिन मैं यह नहीं जानता था कि वह कौन बुजुर्ग हैं जिनका ज़िक्र ख़ैर होता रहता है।

मेरी दादी जन्नत आशियाने जब मदार सहाब के चाँद के दिन शुमार करतीं तो मैं सोच में पड़ जाता था कि आख़िर वह कौन-सा चाँद है। जिसका उनको इन्तिजार है इस किताब में मैंने निहायत इख़तिसार के साथ हज़रत के हालाते तय्यबात, सैरो सियहत के वाकियात, शादी न करने के वजुहात, आपके शबे व रोज़ की तफ़सीलात, आपकी कल्बी कैफियात, मुरीदों को हिदायात खुलफ़ा को इहका- मात, खसाइल व आदात, मजहबी व रूहानी जज़बात इश्क

इलाही की केफियात, तर्क लज्ज़ात, मुराक़बात व मुशाहीदात, व तालीमात, कलमाते तय्येबात, आपकी तालीम व तलकीन के असरात, कश्को करामात मुजाहिदात और मकसूफात पेश करने की कोशिश की हैं।

अगर मेरा यह अकीद नजराना हज़रत शाह मदार रह० ने कबूल फरमाया तो यह मेरे लिए बाइसे फखर मुझे कवी उम्मीद है कि खवास व अवाम इस किताब से मुसतफीद होंगे अगर ऐसा हो तो मैं समझूंगा कि मेरी महनत राइंगा नहीं गई।

—जहुरूल हसन "शारिब"

"बिसमिल्लाह हिरंहमनिर्रहीम"

खानदानी हालात

हजरत सैय्यद बदीउद्दीन कुतुब मदार कुद्दुसालेकीन थे ज़ैबतुल आरेफिन थे मसदरे खरके आदात थे मजहर कश्फ व करामात थे जाहिदों के रहनुमा थे अबिदों के मुकतिदा थे, हक नुमा हक रस थे, हक गौ थे, हक आगह थे।

आप बरें सगीर हिन्द व पाक व बंगला देश के मकबूल व मारूफ औलिया करांम में से थे।

आपका खानदान सादात नबी फातिमा रज़ी से था आप हज़रत इमाम हुसैन रजी० की औलाद इमजाद से थे जो बीबी फातिमा के लख्ते जिगर थे और इमाम औलिया हजरत अली करमउल्ला वजैह के नूरे नजर थे।

हजरत शाहमदार रह० के दादा सैय्यद बहानउद्दीन जैहद तकवा के लिए मशहूर थे, उनके वालिद सैय्यदजहीर उद्दीन यादे इलाही में जिन्दगी गुजारते थे उनके वालिद सैय्यद अहमद कनाअत का मुजससिमा थे उनके वालिद सैय्यद इसमाईल की सखावत का यह हाल था कि कोई साइल उनके दर से खाली हाथ कभी नहीं लौटा उनके वालिद सैय्यद मुहम्मद इरफान की दौलत से मालामाल थे

उनके वालिद सैय्यद इसमाईल सानी ने हजरत ईमामजाफर सदिक रजी से फैज पाया था हजरत इमाम जाफर सदिक अपने वालिद हजरत इमाम मुहम्मद बाकर के तरबियत याफता थे हजरत इमाम मुहम्मद बाकर अपने वालिद हजरत इमाम जैनुल आबेदीन के जा नशीन थे हजरत इमाम जैनुल आबेदीन अपने वालिद हजरत इमाम हुसैन अलैह अस्सलाम के साथ करबला में थे हजरत इमाम हुसैन सखरे आलम हजरत मुहम्मद मुस्तुफा सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम के नवासे थे और इमाम औलिया हजरत अली करम उल्लाह वजैह और हजरत बीबी फातिमा के सावजादे थे।

हलब में हजरत शाहमदार के खानदान के अफराद को इज्जत और अहतराम से देखा जाता था आपके खानदान के अफराद को विकार हासिल था जो और लोगों को मैअस्सर नहीं था वह इस बात पर फखर करते थे कि वह सखरे आलम हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम की सावजादी हजरत बीबी फातिमा की औलाद में से थे।

खिदमते खलक को वह अपना एक खुशगवार फराजिया समझते थे, वह उलूम जाहिरी व बातिनी से आरास्ता थे गुरूर निखवत व पन्दार से यकसर आजाद थे। तवक्कुल उनका मसालां था वह अपनी निसबत पर नाजां थे।

बाअज ने इस बात को तसलीम करने से इन्कार किया हैं। कि आपके खानदान के अफराद हजरत इमाम जाफर

सादिक की औलाद व इमजाद से थे बाअज का ख़्याल है कि वह कुरैशी थे और बाअज का ख़्याल है कि वह बनी इसराइली थे।

हजरत काजी हमीदउद्दीन नागौरी रह० ने अपने एक खत में आपके (शाहमदार के) मुतल्लिक लिखा है कि आप अपने वालिद की तरफ से हुसैनी थे और वालिदह की तरफ हसनी थे।

हजरत अशरफ जहाँगीर समनानी ने भी आपके शिजरए नसब के मुतल्लिक यह ख़्याल जाहिर किया है कि आप हजरत इमाम हुसैन की औलाद अमजाद से थे।

हजरत शाह मदार रह० के शिजरए पदरी में आपके वालिद के नाम के साथ लफ्ज काजी लिखा गया है इसके मायनी यह हुए कि वह क़ाज़ी थे, उस जमाना में कज़ात के औहद की बहुत अहमीयत थी और यह औहदह उन लोगों को दिया जाता था जो उलूम जाहिरी से आरास्ता व पैरास्ता होते थे और जो हस्बो नस्ब के लिहाज़ से इमतियाजी शान रखते थे, खानदाने सादात से होने से बढ़कर और कौनसा शरफ हो सकता है।

अगर यह भी मान लिया जाये कि आपके खानदान का खानदाने कुरैश से तअल्लुक था तो यह भी कम बात नहीं है खानदाने कुरैश से होना खुद एक एजाज़ है। अगर इस पर कोई खानदान नाज़ा हो या फखर करते तो कुछ

बेजा नहीं यह बात तो सही है कि मदारिया सिलसिला की इब्तिदा आप से हुई और आप ही (हजरत शाह मदार) मदारिया सिलसिला के मुनशाद व मुबदा हैं या लेकिन यह बात गलत है और गलत फहमी पर मुबनी है कि आप बनी इसराईली से तअल्लुक रखते थे जैसा कि कहा गया है कि—

"दर रिसाला ईमाने महमूदी" कि तसनीफ शेखमहमूद मुरीद हजरत बदीउद्दीन मदारास्तमी आरद मदार इबने अबू इसहाक शामी दरमिल्लत मूसा अलैह अससलाम व अज़ फरजिन्दाने हारून अलैह अस्सलाम व शागिरद हदीफा शामीबुद व तौरीत व ज़बूर व इनजील रा दर्स मी गुफ्त।

तर्जुमा रिसाल ईमाने महमूदी में जो शेख महमूद की तसनीफ है और वह हजरत बदीउद्दीन मदार के मुरीद में यह दिया हुआ है कि मदार इबने अबू इसहाक शामी मूसा अलैह अससलाम की मिल्लता से व बस्ता थे और वह हारून अलैह अससलाम के फरजिंदों में से थे और वह हदीफा शामी के शागिद थे, और वह तौरीत, ज़बूर और इनजील का दर्स दिया करते थे।

खानदान का परतो और खानदानी माहौल का असर इन्सान की खुसूसियात पर पड़ता है—वह असर ऐसा नहीं होता कि छुपा रहे, बल्कि नुमायाँ होकर रहता है लेकिन आपकी (हजरत शाह मदार) जात वाला सफ़ात में बनी

इसगाईसी का कोई असर मालूम नहीं होता आपने जो इस लाम की बे लोस खिदमत की और जिस तरह से पैगाम हक लोगों तक पहुँचाया वह मखफी नहीं, जिस तरह से आपने सिलसिला की तबलीग कि उसको फरामोश नहीं किया जा सकता—

आपके मुताअल्लिक यह कहा गया है कि—

"आपका सिलसिला व सबब दराज़ी उम्र या किसी और वजह से पाँच या छैः वास्तों से हजरत रिसालतपनाहाँ स्वल्लल्लाहो अलैह वसल्लम तक पहुँचता है।"

इसमें किसी शक व शुबा की गुंजाईश नहीं है। कि आप सदाते नबी फातिमा से हैं अब रहा आपका हाशमी होना तो इसके मुताअल्लिक यह कहा जा सकता है कि खानदाने रिसालत से निसबती तआल्लुक होना एक बड़ा एज़ाज है।

हजरत शाह मदार को सैय्यद कहा गया है। आपको "शाह" भी कहा गया है। "शाह" वह खिताब है। जो दुरवेशों के लिए मखसूस है, लफ्ज "शाह" उस बात का इशारा करता है कि आप (हजरत शाह मदार) एक दुरवेश थे और एक सूफी साफी थे।

वालिद माजिद

हजरत के वालिद माजिद का नाम सैय्यद अली है। क्योंकि वह हलब के रहने वाले थे, इस नसब से वह हलबी कहलाते थे, बअज ने उनको काज़ी सैय्यद अली हलबी लिखा है उनकी जिन्दगी का एक रोशन पहलू यह था कि

हालात से मुतअस्सिर नहीं होते थे, हालात कुछ भी हों, हवाऐं मुखलिफ चल रही हों, दुश्वारियाँ घेरे हुए हों लेकिन यह कभी दिल बरदाश्ता नहीं होते थे खुदा की रहमत से कभी न उम्मीद नहीं होते थे तवक्कुल उनका शआर था था इबादत और रियाज़त में सुकून तलाश करते थे।

खिदमते खल्क, हमदर्दी, और लोगों की हाजत बरावरी सके जज़बा से जिन्दगी महदु थी, वह तहसील उसूम जाहिरी हासिल करके उलूम बातिनी की तरफ मुतवज्ज़ह हुए।

वह सैय्यद बहाउद्दीन के साबजादे थे, उनके दादा का नाम सैय्यद जाहिरउद्दीन था।

वालदह मजिदह

हजरत की वालदह मजिदह फातिमा सानिया एक जाहिदा और आबदह थीं वह हाजरा बीबी के लकब से मशहूर थीं और सैय्यद अब्दुल्ला की साबजादी थीं। सैय्यद अब्दुल्ला के वालिद का नाम सैय्यद जाहिद था।

बशरत कब्ल अज़ विलादत

आपकी विलादत से कब्ल आपके वालिद मजिद को यह बशरत हुई कि उनके घर में एक मुकतिदाए वक्त पैदा होगा जो दुनिया में एक रूहानी इन्क़िलाब पैदा करेगा उससे हजारों लोग फैजियाब होंगे और इसके जरिए से

हजारों लोग मंजिले मकसूद पर पहुँचेगे वह लोगों को राहे हक़ दिखायेगा और बहुत से लोगों को तारीकी से निकालकर रोशनी में ले जायेगा इस बशरत में उनको यह हिदायत भी थी कि इन पर लाजिम है कि वह इस बच्चे की परवरिश और तालीम व तरबियत में किसी किस्म की गफ़-लत न बरतें और न ही कोई कोताही करें आपके वालिद को इस बशरत से जो खुशी हुई होगी इसका अन्दाजा लगाना तो मुश्किल है लेकिन यह जरूर है कि इस बशरत से उनकी जिन्दगी में एक नुमायां तबदिली पैदा हुई वह सब्र के तो पहले से ही आदी थे अब हर वक्त मलिके हकीकी का शुक्र अदा करते थे इस माबूद हकीकी ने उनको एक फैज का चश्मा देने का मसदह सुनाया है और उनको मुन-तखिब फरमाया कि वह फैज का चश्मा उनके घर से जारी होगा, गर्ज़ खुदा वन्द ताआला का शुक्र बजा लाए और बच्चे की पैदाइश का बेचैनी से इन्तजार करने लगे।

विलादत से पहले के वाक़ियात

अभी आप शिकम मादर में ही थे कि अजीब अजीब बाकियात जाहिर होना शुरू हुए आपकी वालिदह माजिदह तरह तरह के ख्वाब देखती थीं कभी वह देखती थीं कि एक नूर उनको घेरे हुए है, कभी ऐसी दिलाविर खुशबू महसूस करती कि जिसके सूंगने से दिमाग ऐसा मुअत्तर हो जाता था कि उसका असर कई दिन तक रहता था। कभी ऐसी

तजल्लियां जाहिर होती कि उनके लिए बाईस हैरत होती थी, कभी आपकी वालिदह मजिदह को महसूस होता कि एक रोशनी इनके अन्दर चक्कर लगा रही है वह रोशनी कभी नाक से ऊपर जाती है और कभी नाक से नीचे आती है कभी आपकी वालिदह माजिदह अजीब किस्म की आवाज सुनती जिससे वह खौफ़ जदा नहीं होती थी अलबत्ता सोच-विचार में पड़ जातीं थीं कि आखिर क्या बात है कि जब से वह हामला हुई हैं इस किस्म के वाकियात रूनुमा हो रहे हैं आपकी विलोदत के वक्त भी अनवार नमूदार हुए एक ऐसा नूर देखने में आया कि जिसने आपके मकान को घेर लिया अनवारे गेबी व कसरत जाहिर हुए जमीन से आसमान तक नूर ही नूर था।

विलादत

हजरत ने सुबह सादिक यकुम ख़्वाल ४४२ हि० को इस आलम न पायेदार को अपने कुदुम से सरफ़राज फरमाया आपकी पैदाइश हलब में हुई आपकी तारीख पैदाइश में इख-तिलाफ है बअज़ का कहना है कि आप २४२ हि० में पैदा हुए बअज के नजदीक आपकी तारीख पैदाइस १८२ हि० है बाअज का ख्याल है कि आप ३०० हि० पैदा हुए आपकी तारीख विलादत के मादे जो लिखे गये हैं वह "मैनसिर, और "शाहे कोसनी" है शाहे कोसनी" भी आपकी पैदाइश की तारीख है हजरत जब पैदा हुए तो आप सज्जदे में थे।

जब दाया ने गुस्ल दिया और कपड़े पहनाए तो आपने कलमाए शहादत बुलन्द आवाज से पढ़ा हजरत खिजर अलैहअस्सलाम ने आपके वालिद को मुबारिकबाद दी। हजरत इदरीस हल्बी की रिवायत के मुताबिक सरवरे आलम हजरत मुहम्मद मुस्तुफा स्वल्ललल्लाहोअलैह वसल्लम ने मय-सहाबा आपके वालिद मजिद के मकान को अपनी तशरीफ आवरी से मुशर्रफ फरमाया।

नाम नामी

आपका नाम सैय्यद बदीउद्दीन है लकब आप "कुतुबुलमदार" के लक़ब से मशहूर हैं "शाह मदार" के लकब से भी आप पुकारे जाते हैं "किन्नियत" आपकी "किन्नयत" अबू तुराब है।

नसब नामा पिदरी

आपका नसब नामा पिदरी इस तरह है सैय्यद बदी-उद्दीन बिन सैय्यद अली हलबी बिन सैय्यद बहाउद्दीन बिन सैय्यद जहीरउद्दीन बिन सैय्यद अहमद बिन सैय्यद इसमाईल बिन सैय्यद मुहम्मद बिन सैय्यद इसमाईल सानी बिन ईमाम जाफर बिन ईमाम मुहम्मद बाक़र बिन ईमाम जैनुल आबेदीन बिन ईमाम हुसैन बिन ईमाम औलिया हजरतअली करमउल्ला वजैह।

नसब नामा मादरी

आपका नसब नामा मादरी हस्ब जैल है ! फातिमा सानी उर्फ बीबी हाजरा बिन्ते सैय्यद अब्दुल्ला बिन सैय्यद जाहिद बिन सैय्यद मुहम्मद बिन सैय्यद अबिद बिन सैय्यद स्वालेह बिन सैय्यद अबू यूसूफ बिन सैय्यद अबू कासिम मुहम्मद तलब ब नफीस जकिया बिन सैय्यद अब्दुल्ला महज बिन हसन मसना बिन इमाम हसन बिन ईमामुल औलिया हजरत अली करम उल्लह वजेह ।

तालीम व तरबियत

हजरत की परवरिश वालदेन के साये अफियत में हुई हजरत का बचपन और बच्चों की तरह नहीं था बचपन से ही आसारे बुजुर्गी नुमायां थे आप आजान ब गौर सुनते थे और अगर दूध पीते होते और आजान की आवाज आती तो आप फौरन दूध पीना छोड़ देते थे आपके वालदैन को आपकी इस बात पर ताअज्जुब भी होता था । और खुशी भी आपके वालदैन जब कुरआन शरीफ पढ़ते और आपके कान में आवाज जाती तो आपके चेहरे पर खुशी के आसार नुमूदार होते थे जिससे यह अन्दाजा होता था । कि आप कुरआन शरीफ के सुनने से लुफ्त अंदोज हो रहे हैं । आपके वालदैन ने आपकी तालीम व तरबियत पर खास तवज्जेह दी जब आपकी उम्र ४ साल चार महीने और चार दिन की हुई तो आपके वालिद मजीद ने "आपकी बिसमिल्लाह"

की रसम बड़े तुजक व एतिशाम से की जिसमें एहले दिल आलिम और सूफी काफी तादात में शरीक हुए आपकी तालीम के लिए आपके वालिद मजिद की नजर इन्तिखाव मौलाना हदीफा शामी पर पड़ी मौलाना हदीफा शामी एक अलिम व अमल होने के अलावा एक साहिबे दिल बुजुर्ग भी थे वह इल्म व फजल के यकताएँ रोजगार थे वह हल्ब में और हल्ब से बाहर उनके इल्म व फजल का बड़ा शौहरा था।

मौलाना हदीफा शामी ने आपको इब्तिदाई तालीम शुरू कराई कवाइद का दरस दिया बादअजां कुरआन शरीफ पढ़ाना शुरू किया आपने कुछ ही अर्से में कुरआन शरीफ खत्म कर लिया आप कुरआन शरीफ के रमजोनुकात पर और बारीकिओं पर भी गौर करते थे और कुरआन शरीफ के मायने व मतालब को ब खूबी समझते थे बाअज ऐसी बातें करते और ऐसे सवालात करते थे कि आपके उस्ताद आपकी इस जहानत और नुक्ता सन्जी पर हैरत जदा हो जाते और वह अपने शार्गिद हजरत शाह मदार का जौक व शौक और खुदा जात जहन देखकर खुश होते थे बारह साल की उम्र में आपने बहुत कुछ इल्म हासिम कर लिया तफसीर हदीस फिका सर्फो नह मन तक रियाजी हैय्यत और हिन्दसा में ओप ने दस्तारगाह हासिल की और जपदही इल्म माकूल व मनकूल से फारिग

हुए चौदह साल की उम्र में आपका उल्मा में शुमार होने लगा।

आपकी शौहरत सुनकर लोग दूर-दूर से आपके पास आने लगे आपको इल्में फिमियाँ और इल्में समीमियाँ और इल्में रहीमीया में भी आला काबलियत थी यह देखकर आपके उस्ताद मौलाना हदीफा शामी ने आपके मुतअल्लिक यह पैशन गोई की कि इस बच्चे का नकता इस तबीयत एक न एक दिन रंग लायेगी वह जिस तरह से कुरआन शरीफ के मायने व मुतालिब बयान करता है और जिस तरह से हदीस के मायने व मजमरात की वजाहत करता है। वह इस बात की दलील हैं कि वह बड़ा होकर एक बड़ा अलिम ही नहीं बलिक एक अरिफ और खुदा रसीदा बुजुर्ग होगा और विलायत के आला दर्जे पर फाइज होगा आपके उस्ताद की यह पौशन गौई हर्फ ब हर्फ सही साबित हुई।

सेयरो सियाहत

हजरत मदार शाह रह० ने कुरआन शरीफ के फरमान "सैयरू फिल अर्द" के मुताबिक जिन्दगी का खास हिस्सा सैयरो सियाहत में गुजरा दुरवेशों और सूफियों की तरह आपने भी मुसाफरत की जहमत और तकलीफ बरदाश्त की जब आप उलूम जाहिरा की तहसील से फारिग हुए तो एक दिन आपने अपने वालिद मजिद की खिदमत में यह

दरख्वास्त पेश की उनको हरमीन शरीफ की जियारत से मशर्रफ होने की इजाजत फरमायें।

आपके वालिद बुजुर्गग्वार ने आपके जौक शौक को देखकर बगौर किसी पस व पैश के आपको इजाजत दे दी।

जियारत हरमीन शरीफ

इजाजत मिलते ही आप बगैर किसी जाहिरी असबाव के रवाना होगए मक्कए मुअज्जमा पहुँच कर खुदावन्दता आला का शुक्र बजा लाए, हज का फरिजा अदा किया जब तक मक्कए मुअज्जमा में आपका कयाम रहा आपका महा-मूल था कि ज्यादह वक्त इबादत, रियाजत और मुरकवा में गुजारते थे एक दिन जो आप मुराकबा में मशगूल थे तो आपको यह बशारत हुई कि अब वह वक्त आगया है कि वह मदीना मुनव्वरा जाकर सखरे आलम हजरत मुहम्मद मुस्तुफा स्वल्लल्लाहे, अलैह वसल्लम के रोजापुर अनवार की जियारत से मुर्शरफ हूँ।

आपके लिए यह इशारा काफी था, आप मदीना मुनव्वरा रवाना हुए।

मदीना मुनव्वरा में हाज़री

मदीना मुनव्वरा पहुँचकर आप जब रोजए पाक आंहजरत स्वल्लल्लाहो अलैह वसल्लम पर हाजिर हुए तो

आप पर एक वालहाना कैफियत तारी हुई आपकी आँखों से आंसू जारी थे मदीना मुनव्वरा में जब तक रहे आप दरुदो-सलाम का तौहफा आंहजरत स्वल्लल्लाहो अलैह वसल्लम की खिदमत में भेजते रहे रोजए अतहर पर रोजाना पाबन्दी से हाजरी देते थे कि आपको हुजूरी की दौलत नसीब हुई, निसबत मुहम्मदी से आपका क्लब रोशन हो गया यह भी कहा जाता है कि आंहजरत स्वल्लल्लाहे अलैह वसल्लम ने इमाम औलिया हजरत अली करम उल्लाह वजेह को हुक्म दिया कि आपकी तरबियत फरमाये और आपको इल्मे मारफत से रोशनास करें चुनाचिह्व इस तालीम व तरबियत की बरकत से आप निसबते मुहम्मदी से बहरा मन्द मुस्त-फिज हुए एक दिन आपको आंहजरत स्वल्लल्लाहो अलैह वसल्लम से यह हुक्म मिला किः—

"बदीउद्दीन अब हम तुमको रूखसत करते हैं तुम अब हिन्दुस्तान जाओ और वहाँ पहुँचकर तालीम व तलकीन और रश्दो हिदायत में कोई कसर न उठा रखो वहाँ लोगों को पैगाम हक सुनाओ और लोगों की खिदमत में हमातन मसरूफ रहे।" यह हुक्म पाकर आप हिन्दुस्तान रवाना हुए।

हिन्दुस्तान में आमद

आप हिन्दुस्तान समुन्दर के रास्ता से पहुँचे काठिया-बाड़ पहुँचकर आपने उस जमाने के एक मशहूर शहर कमांचा

में कुछ दिन कयाम फरमाया वहाँ रहकर आपने एक गुसल भी किया जिसको गुसले हयाते अबदी कहते हैं।

अहमद आबाद में कयाम

उस जमाने में अहमद आबाद शहर वजूद में नहीं आया था। आपने दरियाए साबिरमती के करीब उस जगह कयाम फरमाया जहाँ अब अहमद आबाद है।

पालनपुर में कयाम

पालनपुर में आपने कुछ दिन कयाम फरमाया वहाँ बहुत लोग आपसे फैजियाब हुए।

अजमेर शरीफ में कयाम

पालनपुर से आप अजमेर शरीफ पहुँचे अजमेर शरीफ पहुँचकर आपने कोकला पहाड़ी पर कयाम फरमाया अजमेर शरीफ के कयाम के दौरान आप बजौक व शौक सुल्तान हिन्द हजरत ख़्वाजा मुईनउद्दीन हसन चिश्ती रह० से मिले अजमेर शरीफ में कुछ अरसा कयाम फरमाया और फिर आपको जियारत खाना काबा का शौक दामनगीर हुआ।

मक्का मुअज्जमा में कयाम

आप मक्का मुअज्जमा पहुँचे और वहाँ पहुँचकर हज किया और कुछ दिन वहाँ कयाम किया वहाँ आप ईबादत व रियाजत में ज्यादह वक्त गुजारते थे।

मदीना मुनव्वरा में हाजरी

हज से फारिग होकर आप मदीना मुनव्वरा पहुँचे और वहां रोजा मुनव्वरा आं हजरत स्वल्लल्लाहो अलैह वसल्लम पर हाजिर होकर दरूदो सलाम का तौहफा आं हजरत स्वल्लल्लाहो अलैह वसल्लम की खिदमत में पेश करने की साअदत हासिल की।

नजफ अशरफ में कयाम

मदीना मुनव्वरा में कुछ अर्से कयाम करके आप नजफ अशरफ रवाना हुए नजफ अशरफ पहुँचकर आप इमाम औलिया, हजरत अली करम उल्लाह वजैह के रोजे अक्दस पर हाजिर हुए वहाँ कुछ दिन रहकर हजरत अली करम उल्लाह वजैह के फैज व बरकात से मालामाल हुए।

हल्ब में कयाम

नजफ अशरफ से आप अपने खुल्फाये और मुरीदेन को हमराह लेकर अपने वतन हल्ब में रोनक अफरोज हुए।

कस्बा चुन्नार में कयाम

हल्ब से कस्बा चुन्नार जो नजफ शरीफ के मुजाफात में मशहूर कस्बा था पहुँचे वहाँ पहुँचकर अपने सूरी व मअनवी फरजिंदान हजरत सैय्यद अबू मुहम्मद अरगून हजरत सैय्यद अबूतुराब फनसूर और हजरत सैय्यद अबू उल हसन तैफूर को अपने हमराह लेकर मदीना मुनव्वरा हाजिर हुए मदीना

मुनव्वरा के कयाम के दौरान आप आंहजरत स्वल्लल्लाहो अलैह वसल्लम के रोजए मुनव्वरा पर हाजिर रहते थे और दरूदो सलाम का तोहफा आंहजरत स्व० की खिदमत व वरकत में पेश करने की सअदत हासिल करने में कोशा रहते थे। एक दिन ऐसा हुआ कि आप मुराकबा में थे कि आपको बशारत हुई आपने जो बगौर इरशाद आंहजरत स्वल्लल्लाहो अलैह वसल्लम सुना तो आपको मालूम हुआ कि आपको यह हुक्म हुआ है कि—

बदीउद्दीन ! हिन्दुस्तान जाओ और पैगामे हक लोगों तक पहुँचाओ हमने तुम्हारे कयाम के लिए हिन्दुस्तान तजवीज़ किया है। हिन्दुस्तान में एक शहर कन्नौज़ है। कन्नौज के करीब एक मुकाम जुनूब की तरफ है। वह वसी मुकाम हैं उसके जुनूब की तरफ एक तालाब है। उस तालाब की लहरों से "या अज़ीज" की आवाज हर वक्त आती रहती है। हम वह मुकाम तुम्हारे लिये मकसूस किया है तुम्हारे वहाँ पहुँचने पर वह "या अजीज की आवाज बन्द हो जायेगी और वह तालाब भी खुश्क हो जायेगा वहीं तुम्हारा मदफन होगा वह जगह मरजरा खास व आम होगी।

यह मसदा फरहंत अफजा सुनकर आप बहुत खुश हुए और आमादरा सफर हुए मदीना मुनव्वरा से बादले निस्वास्ता रवाना हुए।

बस्ताम में क़याम

मदीना मुनव्वरा से रवाना होकर अपने पीरो मुरशिद हजरत सैय्यद तौफ़ूर शामी के मजार पर हाजिर हुए यहाँ एक मसजिद के हुजरा में कयाम फरमाया वहाँ आपका कयाम काफी दिन रहा इस हुजरा में आप मशगले हयाते अब्दी और मशगले सुल्तानुल अजकार में महू व मशगूल रहते थे वहाँ आपने इमारत तामीर कराई अपने पीरो मुरशिद के मजार पर आप कुछ दिन मअतकिफ़ रहे।

काज़मीन शरीफ़ में क़याम

चन्द मुरीदेन व मौअत्कदीन को साथ लेकर आप काजमीन शरीफ़ रवाना हुए काजमीन शरीफ़ में कुछ अर्से रहे।

बग़दाद शरीफ़ में क़याम

काजमीन शरीफ़ से आप बगदाद शरीफ़ पहुँचे वहाँ आपने सैय्यद महम्मद जमालउद्दीन, सैय्यद अहमद सैय्यद रुकनुउद्दीन हसन अरब और मीर शम्सउद्दीन हसन अरब को ब्यैत से मशर्रफ़ फरमाया।

खुरासान में क़याम

खुरासान पहुँचकर आपने यहाँ कुछ दिन कयाम फरमाया खुरासान में एक बुजुर्ग रहते थे जिनका नाम शेख नसीरउद्दीन था शहर के सभी सूफी दुरवेश और आलम

आपसे (हजरत शाह मदार रह०) मिलने के लिए आए लेकिन शेख़ नसीरउद्दीन नहीं आये, हालांकि उनको आप की तशरीफ़ आवरी का इल्म था एक दिन हजरत शाह मदार रह० के खलीफा सैय्यद जमालउद्दीन जन्नती से उनकी इत्तिफाकन मुलाकात हुई, उन्होंने शेख नसीरउद्दीन से कहा कि शाह मदार साहब शहर में मुकीम हैं आप उनसे नहीं मिले शेख नसीरउद्दीन ने उनको जवाब दिया कि मुझे उनसे मिलने की कोई जरूरत नहीं वह भी वली हैं मैं भी वली हूँ, और कुछ ऐसे अल्फाज भी हजरत शाह मदार रह० के मुताअतिलक कहे जिनसे सैय्यद जमालउद्दीन जन्नती के जजबात को ठेस लगी नतीजा यह हुआ कि उनकी कैफियत सलब होगई थोड़ी देर में वह हजरत शाह मदार रह० की खिदमत में हाजिर हुए हजरत शाह मदार रह० ने सैय्यद जमालउद्दीन जन्नती को इशारा किया वह आपका इशारा समझ गए और शेख नसीरउद्दीन को उनकी सलब नैयमत वापिस करदी।

ब्यैत व खिलाफत

हजरत शाह मदार उन बुजुर्गों में से थे जिनको उवैसिया निस्बत हासिल थी आपको सरवरे आलम हजरत मुहम्मद स्वल्लल्लाहो अलैह वसल्लम से बला वास्ता रूहानी फैज पहुँचा था। हजरत काजी महमूद नतैरी ने जब आप का शिजरा लिखना चहा और आप से दरख्वास्त की कि

हजरत अपना शिजरा उनको लिखवा दें ताकि सनद हो जाये और लोगों के शक श्बहात दूर हो जाये, तो हजरत ने उनसे फरमायाः

"अपना नाम लिख लो फिर मेरा—और फिर सरवरे आलम स्वल्लल्लाहो अलैह वसल्लम का" इससे साफ़ जाहिर है कि हजरत को सखरे आलम स्वल्लल्लाहो अलैह वसल्लम से वलावास्त फैज पहुँचा था।

उव्वैसिया निस्बत बहुत आला निस्बत है यह निस्बत एक क़िस्म का इनाम है हजरत के अलावा चन्द और औलिया कराम भी उव्वैसिया निसबत से सरफ़राज थे।

मदारिया सिलसिला के लोग हजरत की इस निस्बत खास यानि उव्वैसिया निसबत पर फखर करते थे और फखर करते हैं इसी निसबत का असर हैं कि—

"वाई खानवादए मदारिया कि अज वे ज़हूर याफ्ता अन्द आतरा मदारिया उव्वैसिया नेज गोइन्द"

तर्जुमाः—और यह खानवादह मदारिया जो इनसे जारि हुआ उसको मदारिया उव्वैसिया भी कहते हैं।

हजरत उव्वैसिया निस्बत से तो मुमताज थे लेकिन फिर भी आप पीरो मुरशिद की तलाश में थे। आपने हजरत तैफ़ूर शामी रह० की खिदमत में जाकर उनके दस्ते हक परस्त पर ब्यैत की हजरत तैफ़ूर शामी रह० रूहानी अज-

मत के मलिक थे वह दमशिक में रहते थे और वहाँ एक मसजिद में पैश इमाम थे उलूम जाहिरी व बातिनी से आरास्ता व पैरास्ता थे उनकी वफात के मुताअल्लिक इख-तिलाफ है बअज का ख्याल है कि उन्होंने सन् ५६२ ही० में वफात वाई लेकिन बअज को इससे इखतिलाफ है। उनके नजदीक सन् ५६६ हि० उनका विसाल हुआ आपके पीरो मुरशिदे हजरत तैफूर शामी रह० ने आपको जिसे दम की तालीम दी और यह ताकीद की कि जिसेदम पाबन्दी से किया करें चुनाचिह आप अपने पीरो मुरशिद कि इस हिदा-यत पर अमल उम्र भर कारगर रहे हजरत ने अपने पीरो मुरशिद से खिरकए खिलाफत पाया और हजरत साहिबे महजाज हुए।

शिजरए बयैत

हजरत का शिजरए ब्यैत दर्ज जैल हैः—

हजरत सैय्यद बदीउद्दीन कुतुब मदार रह० मुरीद हज रत सैय्यद मुहम्मद तैफूर शामी मुरीद हजरत यमीनउद्दीन रह० शामी हजरत जैनुल आबेदीन मिसरी मुरीद हजरत अब्दुल औल तजानदी रह० मुरीद हजरत अबी रबी कुद्दसी मुरीद हजरत ख्वाजा अब्दुल्ला मली आलमबरदार हजरत सिद्दीक अकबर रजी अल्ला ताआला अन्हो इस नसब से सिलसिला तैफूर या मदारिया हजरत शाह मदार रह० से जारी हुआ यह भी कहा जाता है कि आपने एक और बुजुर्ग से भी ब्यैत की थी शाम के

रहने वाले थे, और जिनका नाम भी सैय्यद तैफूर शाम था उनके मुतअल्लिक यह मशहूर है कि वह हजरत इमाम जाफर सदिक रज़ी० की औलाद अमजाद से थे, हजरत यामीनउद्दीन शामी के मुरीद और खलीफा थे हजरत सैय्यद मुहम्मद तैफूर शामी ने २७ रजब सन् ४६० हि० को वफात पाई बाअज का ख्याल है कि उनकी वफ़ात सन् ४९१ हि० में हुई उनका मजार बुस्ताम में हैं। उनके पीरो मुरशिद हजरत यामीनउद्दीन शामी का खिरकए जिन्दा सौफ था उन्होंने २७ जिलहिज बरोज जुमा ३७८ हि० को वफात पाई उनका मजार बुस्तान में है।

शिजरए ब्यैत

शिजरए ब्यैत इस तरह है।

हजरत सैय्यद बहीउद्दीन शाह मदार रह० मूरीद हजरत सैय्यद मुहम्मद तैफ़ूर शामी रह० मूरीद हजरत ख़्वाजा यमीनउद्दीन शामी मूरीद हजरत सुल्तानुल आरफीन हजरत ब यजीज बुस्तामी मूरीद हजरत सैय्यद हबीब अहमी रह० मूरीद हजरत ख्वाजा हसन बसरी रह० मूरीद इमामुल औलिया हजरत करमउल्लाह वजैह।

आप (शाह मदार रह०) के मुताआल्लिक यह भी कहा जाता है कि आपने इमामुल आरफीन हजरत ख़्वाजा ब यज़ीज़ बुस्तामी से भी फ़ैज़ पाया बअज का ख्याल है कि आपकी हजरत ब यजीज बुस्तामी रह० से मुलाकात नहीं

हुई और जो फैज आपको पहुँचा वह रूहानी तौर पर पहुँचा लेकिन बअज इस ख़्याल की तरदीद करते हैं और कहते हैं कि जब आप सैरो सियाहत फ़रमाते हुए शाम पहुँचे तो आप की आमद की खबर हजरत ख्वाजा ब यजीज बुस्तामी को पहुँची उन्होंने आपको बुलाया आप जब उनकी खिदमत में हाजिर हुए तो वह बहुत खुलूस व मुहब्बत के साथ आपसे मिले आपसे बगल गिर हुए और आपकी पैशानी और आँखों को बूसा दिया।

हजरत ख्वाजा बयजीज बुस्तामी रह० अपने ख्वाब आप से इस तरह बयान किया कि उन्होंने मखरे आलम स्वल्लाहो अलैह वसल्लम को ख्वाब में देखा कि आंहजरत फरमाते हैं कि शाम में एक शख्स बदीउद्दीन नाम का आने वाला है। जो नेयमत तुमको तुम्हारे पीरो मुर्शिद से मिली है वह बदीउद्दीन की अमानत है। पस आंहज़रत के फरमान के मुताबिक वह नेयमत में तुमको बख्श देता हूँ!

आप हजरत ख्वाजा ब यजीज बुस्तामी रह० से नेयमत पाकर मसरूर थे उस निस्बत से आपका सिलसिला तैफ़ूरीया मदारिया मशहूर हुआ आपने हजरत इमाम महदी आलैह अस्सलाम से रूहानी तौर पर फैयज पाया और उनकी रूहानीयत से मुस्तफीज हुए।

इस निसबत की बिना पर महदीया मदारिया सिल-सिला वजूद में आया सैरो सियाहत के दौरान जब आप

बन्दर खहमाज कौहजर निगार के ऊपर पहुँचे तो सखरे-आलम स्वल्लल्लाहो अलैह वसल्लम के जरिये से आपको दर पैश वहा नैयमतेरूहानी तौर पर हासिल हुई एक तो भिश्ती लिवास था। और दूसरी नैयमत तआम मलकूती यानि नौलुकमा शिर बुर्ज की थी कहा जाता है कि आंहजरत ने नौलुकमा शिरेबुर्ज के अपने दस्ते मुबारिक से आप को खिलाये उनके खाते ही चौदह तबकात आप पर रोशन हो गए।

अब आप जहाँ भी तशरीफ ले जाते वहाँ लोग आपको कल्ब मदार तबकात मशहूर होगए जो लोग आप से वबस्ता थे तबकाती मदारी मशहूर होगए इस तरह से आप से तबकाती मदारी मशहूर होगए इस तरह से आपसे तबकातिया मदारिया सिलसिला जारी हुआ आपको हजरत अबूबकर सिद्दीक रजीअल्ला अन्हो से निस्बत हासिल थी आप मुरीद और खलीफ़ा तौफूर शामी के थे और उनका सिलसिला चन्द वास्तों से हजरत अबूबकर सिद्दीक रजी० पर मुनतही होता है। इस निस्बत से जो सिलसिला आपसे जारी हुआ वह सिद्दीकीया मदारिया मशहूर हुआ।

आपको हजरत इमाम जाफर सादिक रजी० से जसी निसबत के अलावा रीश्दो निस्बत भी हासिल थी इस निस्बत की बिना पर जो सिलसिला आप से जारि हुआ वह कोई न कोई इमतियाजी शान रखता था आपने तालीम व तलकीन

रूश्दो हिदायत के फराइज बहुस्न खूबी अजाम दिए लोग मदारिया सिलसिले से रोशनास हुए बहुत से लोग इसमें दाखिल हुए सिलसिला काफी फैला आपकी हियात जाहीरी में आपकी जात व अलसफात इस सिलसिले की तरजीह व तरक्की और बकाकी मुहाफिज और ज़ामन थी और अब आपकी रूहानी कशिश इसके इस्तहकाम व वाम के लिए काफी है।

हिन्दुस्तान में सुकूनत

सरवरे आलम हज़रत मुहम्मदमुस्तुफा स्वल्लल्लाहो अलैह वसल्लम के फरमान के मुताबिक हजरत शाह मदार रह० मखनपुर में मुस्तकिल सुकूनत इख्तियार करने के ख्याल से हिन्दुस्तान रवाना हुए।

खैबर में कयाम

आपने कुछ दिन खैबर में कयाम फरमाया और रूश्दो हिदायत में वक्त गुजारा, खैबर में आपका कयाम ज़्यादह नहीं रहा लेकिन फिर भी काफी लोग आपसे मुस्तफीद हुए।

काबुल में कयाम

खैबर से काबुल पहुँचकर आपने वहाँ कुछ अर्से कयाम फरमाया कयाम के दौरान आपने वहाँ एक मसजिद और एक कुँआ तामीर कराया।

लाहोर में कयाम

काबुल से रवाना होकर आप लाहोर में रोनक अफरोज़ हुए वहाँ बहुत से लोग आपके हलका बगौश हुए।

शर्फ नगर में कयाम

लाहौर से आप शर्फ नगर पहुँचे और कुछ दिन वहाँ रुश्दो हिदायत फरमा कर देहली रवाना हुए।

देहली में कयाम

देहली के कयाम के दौरान आपने उफ्रान की दौलत खूब लुटाई वहाँ बहूत से लोग आपके सिलसिले में दाखिल हुए, और बहुत से लोग आपसे फैज़ियाब हुए सुल्तान फिरोज तुगलक उस वक्त हिन्दुस्तान का फरमा रवा था वह भी आपका मु तकिद व मुनकाद हुआ इलादाद खाँ आपका ऐसा शेफ्ता फरेफता हुआ कि इसने अपने मनसबविजारत से दस्त बरदार होकर आपकी गुलामी में रहना पसन्द किया वह आपके सिलसिला में दाखिल हुआ आपकी तवज्जह खास से फैजियाब हुआ।

मेवात में कयाम

देहली से आप रवाना होकर मेवात के इलाका में दाखिल हुए जहाँ आपने पैगाम हक सुनाया और बहुत से लोगों को ब्यैत से मशरफ फरमाया वहां पर आपने एक पहाड़ी पर चिल्ला भी खिंचा एक दिन ऐसा हुआ कि

डाकुओं ने आपके हमराहीयों को लूटना चाहा लेकिन वह अपने न पाक इरादे में न काम रहे वह डाकू माफी के ख़्वस्तगार हुए हजरत के हल्कए इरादत में दाखिल हुए उनमें से एक नाम चौधरसद था आपने इसका नाम इस्लाम नबी रखा उसका उर्स मेवात में अब भी होता है। वह चौधर सद्के नाम से मशहूर रहे इस्लाम नबी के नाम से उसे बहुत कम लोग जानते हैं।

जयपुर में कयाम

जयपुर में पहुँचकर आपने जामे वहदत बहुत लोगों को बुलाया जिन लोगों तक यह जाम न पहुँच सका उनके आपके दीदार का शर्बत काफी था।

अजमेर शरीफ में कयाम

अजमेर पहुंच कर आपने कौकला पहाड़ी पर कयाम किया हजरत सैय्यद जमालउद्दीन वहाँ चिल्ला कशी कर रहे थे। वहा शुगले हयात अबदी में मशगूल थे उनको आपने अपने हमराह लिया और अजमेर से रवाना हुए।

मालवा में कयाम

अजमेर शरीफ से रवाना होकर आप मालवा के इलाका में रौनक अफ़राज हुए वहाँ कुछ दिन अमर हिदायत और तालीम व तलकीन में मशगूल रहे।

काल्पी में कयाम

कल्पी में एक अर्से तक कयाम फरमाया आपके कयाम के दौरान मखलूक का आपके आशाना पर हुजुम रहता था। आपके मूरीदेन व मुअतकदीन आपकी रिहाइश के लिए एक हुजरा तामीर किया आप उस हुजरे में यादे इलाही में मशगूल रहते थे। वहाँ काजी सैय्यद सदर, मौलवी मुहम्मद शेख फौलाद हजरत शेख भिखारी मज़दूब और हजरत शेख मुहम्मद इलियास को आपने शर्फे ब्येत बख्शा और बाद अजाउन को खिरकए खिलाफत से सरफराज फरमाया कल्पी के कयाम के दौरान एक ऐसा वाक्य रूनुमा हुआ जो बहस व मुबहशा का मौजू बन गया कल्पी में उस वक्त हजरत सिराजुद्दीन रहते थे जो अब सिराजुउद्दीन सोखता के नाम से मशहूर हैं। वह हजरत मखदूम जहाँनियाँ सैय्यद जलाल-उद्दीन बुखारी रह० की सोहबत व खिदमत में रहते थे वह हाफिज कुरआन थे और एक रात मुद्दत तक हजरत मखदूम जहाँनियाँ के साथ रहकर करामात के फराईज अंजाम देते रहे हजरत मखदूम जहाँनियाँ उन पर बहुत महरबान थे इस वज़ह से बअज लोग उनसे बअज व हसद रखते थे हजरत मजदूम जहाँनियाँ को नूर बातिनी से जब यह मालूम हुई तो आपने फरमाया कि सिराज का यह हाल है कि जब तक काबाए मुअज्जमा नहीं देखता तकबीर तहरीमा नहीं कहता।

क़ादर शाह वल्द मुहम्मद शाह जो सुलतान फ़िरोजशाह के पोतों में एक था उनका (हजरत सिराज) मुरीद था। जब हजरत शाह मदार रह० के कश्फो करामात और खर्क़ आदत का शहरा शहर में होने लगा और आपकी रूहानी अजमत के चर्चे होने लगे तो क़ादर शाह को भी यह सुनकर आपसे मिलने का शौक़ पैदा हुआ उसने अपने पीरो मुरशिद हजरत सिराजउद्दीन से अपनी ख्वाहिश का इजहार किया और आप से (हजरत शाह मदार) मिलने की इजाजत चाही हजरत सिराजुद्दीन ने उनको आप से मिलने की इज़ाज़त नहीं दी।

एक दिन कादर शाह अपने पीरो मुरशिद से छुपकर आपकी कयामगाह पर पहुँचा दोपहर का वक्त था जवाल का वक्त होने की वजह से कादरशाह को दरबान ने अन्दर जाने से रोका कादर शाह को यह बात नागवार गुजरी उसने हाथी पर चढ़कर दीवार के करीब जाकर आपको देखना चाहा लेकिन वह न देख सका दीवार ऊँची होगयी कादर शाह सख्त बरहम हुआ उसने गुस्सा की हालत में आपसे यह कहला भेजा कि आप इसकी सलतनत की हुदूद से बाहर चले जायें हजरत ने यह पैगाम पाते ही कूंच फरमाया और दरियाए जमन के पार जाकर कयाम फरमाया हजरत तो दरियाए जमन के पार चले गए लेकिन कादर शाह के तमाम जिस्म पर आवले पड़ गए इलाज माअलजा से कोई

फायदा नहीं हुआ इत्तिफ़ाक इलाज में नाकाम रहे मजबूर होकर उसने अपने पीरो मुरशिद हजरत सिराजउद्दीन को तमाम वाक़ियात व हालात से आगाह किया उन्होंने उसको अपना पेरहन पहनाया इस पेरहन की बरकत से कादरशाह के दर्द और सोजिश में कमी हो गयी हजरत को बजरिए कश्फ़ से यह मालूम हुआ कि सिराजउद्दीन क़हर इलाही का मुक़ाबला कर रहे हैं हजरत ने गुस्सा की हालत में फरमाया सिराजउद्दीन "लिमा लिमा महरक" यानि सिराजउद्दीन चिरांसोख़्त सिराजउद्दीन क्यों नहीं जला आपका इतना फरमाना था कि सिराजउद्दीन के तमाम जिस्म में ऐसी सोजिश पैदा होगयी कि वह जिन्दगी से मायूस हो गये उन्होंने अपने मुरीदों को वसीयत की कि उनको बग़ैर गुस्ल दिए दफ़न करना उनके इन्तिकाल के बाद उनके बाअज मुरीद इस खिलाफ शरह बात पर अमल करना नहीं चाहते थे मशवरह के बाद यह तय पाया कि पहले थोड़ा सा पानी उंगली पर डाल कर देखा जाये कि इसरा क्या होता है। ज्यों ही उंगली पर पानी डाला गया उंगली खाकस्तर हो गयी उनको बगैर गुसल दिए दफ़न किया गया इस वाक्य के बाद वह सिराजउद्दीन सोख्ता मशहूर हुए कादर शाह भी हजरत के इताब से न बच सका। वह ताज व तख्त खो बैठा यह भी कहा जाता है कि—शेख सिराजुद्दीन सोख़्ता ने यह कहा था कि—शाह मदार ने मुझे जला दिया मैंने उनके सिलसिले को जला

दिया शेख सिराजउद्दीन सौख़्ता के इस बयान की तसदीक नहीं होती मदारिया सिलसिला जारि व सारि है।

जब शाह मदार आपके (शेख सिराज शौख्ता) के जमाना में हरमुनर की तरफ से कल्पी में तशरीफ लाये तो इनके जजबे खलाईक की वजैह से बहुत से लोग उनके गिरद जमा हुए और शौहरत अजीम हुई उनके बआज तरीके जाहिर शरीयत के खिलाफ थे उस वक्त कादर शाह वल्द सुलतान मुहम्मद जो सुल्तान फिरोज तुगलक शाह के पोतों में से था और आपने बाप की वफात के बाद हाकिम हुआ था शाह मदार की शौहरत सुनकर उनकी मुलाकात के लिए सवार हुआ और जिस जगह शाह मदार खुलूत नशीन थे पहुँचा शाह मदार के खादिमों ने कहाकि अब वक्त नहीं है और न हमको हुक्म है कि वे आने की खबर करें जाहिर किसी दुरवेश के साथ खुलूत में थे लेकिन उन्होंने हाकिम से कहाकि एक जोगी आया हुआ है। और उससे बातें कर रहे हैं।

कादर शाह ने उनके खादिमों से कहा कि उनसे कह दिया कि वह हमारे शहर से चले जायें और खुद वहाँ से वापिस अपनी मंजिल को चला गया जब यह बात शाह मदार पर पहुँची तो उन्होंने दरिया के पार उतर कर उसके लिए बददुआ की और एक खादिम से फरमाया कि तुम तीन रोज यहाँ मुनतज़िर रहो और कादर शाह की खबर मुझे

पहुँचाओ जिस वक्त शाह मदार दरिया के पार हुए उस वक्त शाह कादर के जिस्म पर आवला पैदा हुआ और वह सकी हरारत से बे ताकत होगया वह शेख सिराज-द्दीन सोख्ता की खिदमत में हाजिर हुआ शेख ने अपना र्ता उसको दिया जिसको पहनते ही वह अपनी असली हालत पर आगया और हरारत का कोई असर न रहा।

जब शाह मदार के खादिम ने देखा कि उसने शेख सिराज की पनाह ली है तो उसने मायूस होकर दरिया पार करके उनको यह खबर पहुँचायी।

जौनपुर में कयाम

हजरत जब जौनपुर में रोनक अफरोज हुए तो ख्वास व आम ने आपका शानदार इस्तकबाल किया सुल्तान इब्राहीम शरकी, अशरफ खाँ और सैय्यद सदर जहाँ ने आपके दस्ते हक परस्त पर बैत की।

हजरत एक अर्से तक जौनपुर में मुकीम रहे आपके मुरीदेन व मौतकदीन ने आपकी रिहाईश के लिए एक हुजरा तामीर किया जिसमें आप रहते और इबादत व रियाजत रते थे। जब तक आप जौनपुर में रहे आपका यह मामूल ा कि जुमरात के दिन लोगों को वअज व नसीहअत फर-माते थे इतराफ व जवानब के लोग भी आपकी इस मजलिस में शरीफ होते थे।

कस्बा मावर में कयाम

एक मुद्दत तक जौनपुर में रहने के बाद आपने रख्तते सफर बांधा और मुज़ाफाते कन्नौज की तरफ रवाना हुए आपको मुलाकात कन्नौज में बूदोबाश इख्तियार करने की बशारत आंहजरत सल्लल्लाहो अलैहवसल्लम के दरबार गौहरबार से हुई थी रास्ता में आपने कस्बा मावर में कयाम फरमाया वहां बहुत से लोग आप से फैजियाब हुए मौलाना काजी सैय्यद मुहम्मद मजहर किला शैर को आपने खिरका खिलाफत से सरफराज फरमाया कुछ दिन कस्बा मावर में रश्दो हदायत फरमाने के बाद आप वहां से रवाना हुए ।

कन्तूर में कयाम

जब आप कन्तूर में रौनक अफरोज हुए तो वहां के लोग जौक दर जौक आपकी खिदमत में हाजिर हुये। और आपके फ्यूज व बरकात से मुस्तफीद हुए ।

आपके कन्तूर के कयाम के दौरान काजी महमूद को शरफ बारयाबी हासिल हुआ कन्तूर में हजरत एक मस्जिद में रहते थे वही काजी महमूद ने आपको पहलीबार देखा था वह हजरत के हलकए इरादत में दाखिल हुए बाद अंजा खरकए खिलाफत से सरफराज हुये ।

घाटमपुर में कयाम

कन्तूर से हज़रत घाटमपुर पहुँचे और वहां इरफान की दौलत खूब लुटाई वहाँ के राजा के आपकी दुआ से औलाद हुई ।

सूरत में कयाम

घाटमपुर से आप उस मुक़ाम पर पहुँचे जहां अब मशहूर शहर सूरत आबाद है वहां से मुख़्तसिर क़याम के बाद आप कन्नौज रवाना हुए ।

कन्नोज में कयाम

कन्नौज पहुँचकर आपने वहां काफी अर्से तक कयाम फरमाया और लोगों को पैगामे हक़ सुनाया और कुछ लोगों को शरफे ब्यैत बख़्शा ।

मखनपुर में कयाम

कन्नौज से मखनपुर पहुँचे और वही जिन्दगी के आखिरी अय्याम यादे इलाही रश्दो हिदायत और मदारिया सिलसिले के तबलीग व इशाअत में गुजारे मखनपुर मदारिया सिलसिले के वाबिस्तगान के लिये काबये अक़ीदत बन गया हजरत मखनपुर पहुँचने के बाद वह तालाब भी खुश्क हो गया जिसके मुतल्लिक़ आंहजरत स्वल्लल्लाहो अलैह वस-ल्लम ने आपको बशारत दी थी और उस तालाब की लहरों से "या अजीज" की आवाज आना भी बन्द होगयी आं हजरत स्वल्लल्लाहो अलैह वसल्लम की बशारत के मुताबिक़ सब वाक़ियात रुनुमा हुए हजरत के मुरीदेन मुअतक़दीन और हजरत के खुलफाए ने आपकी रियाईश के लिए एक ईमारत तामीर की हजरत इस इमारत में रहने लगे हजरत ने

जिन्दगी के आखिरी उन्तालीस साल मखनपुर में गुजारे मखनपुर के कयाम के दौरान हजरत ने बहुत से लोगों को शर्फ ब्यैत बक्शा एक दिन का वाकिया है कि हजरत ने शाह मुहम्मद यासीन बहजाजखां से वजु के लिए पानी लाने को फरमाया उन्होंने पानी तलाश किया कहीं नहीं मिला उन्होने दुआ मांगी उनकी दुआ मकबूल हुई पानी का एक चश्मा जारी हुआ वह खुशी-खुशी हजरत के वजु के लिए इस चश्मा से पानी लाये हजरत ने उस चश्मे के मुतआल्लिक यह पेशेन गोई फरमाई ! इनशाअल्ला ताआला यह चश्मा फैज ता कयामे अरज व समा कयाम रहेगा और उससे सहराब व फैजियाब एक आलम होता रहेगा यह चश्मा अब भी जारी है।

जौनपुर को रवानगी

मुरीदेन व मुअतकदीन की दिलजुई की खातिर हजरत एक बार फिर जौनपुर को अपने कयाम का शर्फ बख्शा सुल्तान इब्राहीम शरफी काजी शहाबउद्दीन दौलत आबादी, और दीगर लोगों ने हजरत की खिदमत में तोहफा व तहाइफ भेजते और साथ ही साथ हजरत की कदम बोसीका इशतियाक जाहिर किया उन्होंने हजरत की खिदमत में हाजिर होने की इजाजत चाही हजरत ने उनको जवाब दिया कि वह खुद ब नफ्से नफिस जौनपुर आयेंगे चुनाचिह आप

अपने जा नशीन हजरत अबू तुराब फनसूर को मखनपुर में छोड़कर खुद जौनपुर रवाना हुए।

लखनऊ में कयाम

हज़रत जब लखनऊ से गुजरे तो वहां मुखतसिर कयाम फरमाया बहुत से फैजियाने मदारीयत से मालामाल हुये उस वक्त हज़रत शाह मीना लखनऊ में इल्मे इरफान की रोशनी फैलाने में मशगूल थे हजरत शाह मदार ने उनकी अपनी जा नमाज इनायत की और उनकी कबूलीयत का ऐलान तमाम शहर में कराया।

जौनपुर में कयाम

जौनपुर पहुँच कर आपने वहां एक अर्से तक कयाम फरमाया दौरान कयाम वआज़ व नसीहयत फरमाते रहे लोगों को शरबते इरफान पिलाते रहे जौनपुर से मखनपुर रवाना हुये।

वापसी

जौनपुर से (मखनपुर) वापसी तशरीफ लाये सफर तमाम हुआ अब सफर आखरत दरपेश था इस सफर की तैयारी और इन्तिजाम में हमातन मशगूल हुए आपके कदमों की बरकत से मखनपुर को जो इज्जत हासिल हुई उससे अंदाजा इससे किया जाता है कि वह दारून्नूर मशहूर हुआ।

हजरत ने मखनपुर में रहकर सिलसिले की तनजिम खुलफाये की तरबियत मुरीदेन की तालीम और रश्दो हदायत की तरफ खास तवज्जह दी।

रिशदो हिदायत

हजरत शाह मदार रह० की जिन्दगी का बड़ा हिस्सा मखलूके खुदा की खिदमत में गुजरा सफर और हजर में भी तालीम व तलकीन और रिश्दो हिदायत का सिलसिला जारी रहता था लोग दियारो अमसार से आपकी खिदमत में हाजिर होते थे और आपसे फैज पाते थे। मुरीदेन मुअतक दीन और तालबीन आपकी खिदमत में हाजिर होते थे और हरप उनको वअज व नसीहयत फरमाते थे। हर मजहब, हर तबका और हर मकतब ख्याल के लोग जौक दर जौक आपकी खिदमत व बरकत में हाजिर होते थे और मुखतलिफ मसाइल आपके सामने पेश करते थे। कभी कोई बात तरीकत के मुतल्लिक तो कभी कोई बात मारफत के मुतल्लिक होती थी काजी शहाबउद्दीन आबादी ने आपको एक खत लिखा जिसमें आपसे दो सवाल किए—आपने उनके जो जवाब दिया उनमें उनके सवालात का हवाला भी है आपने काजी शहाबउद्दीन दौलत आबादी को जो जवाब दिया उसका खुलासा दर्ज जैल है।

बरादरम काजी शहाबउद्दीन सल्लामोह अल्ला ताआला आपने दो सवाल किए हैं सैय्यद ताहीर के साथ किया

खुसूसियत है कि उनको हर वक्त अपने पास रखते हैं और लोगों को अपनी सौहबत से महरूम रखते हैं।

उलमाए वर्त्तहुल अंबिया हदीस है, यानि उलमाए दीन अंबिया के वारिस व जा नशीन होते है इस इल्म से मुराद यही इल्म है जो मैंने तहसील किया है। या और कोई इल्म है ? इसका जवाब यह है।

हदीस कुद्दुसी है "औलिया तहत कबाई लयारेफाहुम गैरी" यानि औलिया मेरे दामन के नीचे होते हैं उनको मेरे सिवा और कोई नहीं पहचानता जिन लोगों के कल्ब इसरारे इलाही अनवारे इलाही के मुतहमल हो सकते हैं उनकी तरफ औलिया अल्ला खास तौर पर मुत्तवज्जह हुआ करते हर शख्स को इसरार का जानना मुश्किल हैं।

हर गदाए मर्द मैदान के शूदः—पशए आखिर सुलेमान के शूद—खुदावन्दी गैरत ऐसे लोगों को आग खलाईक के नजरों से महफूज व मस्तूर रखती है सैय्यद ताहिर के साथ जो खुसूसियत है इसकी वजह अमरे रब्बी है जिस शख्स के लिए जैसा हुक्म होता है। वैसे ही उसकी तामील की जाती है। रहा दूसरा दो सवाल इसका जवाब यह है। कि इल्म से मुराद इल्मे मारफत है क्यों जिस तरह अंबिया अलैह अस्सलाम इसरारे नमन्ता से वकिफ होते हैं। उनके वारिस व जानशीन पर उनका पर तो होना जरूरी है। वरना जा नशीनी सदिक नहीं आ सकती जो लोग अरिफ

चिल्ला होते हैं उन पर इसरारे खुदावन्दी का इनकिशाफ हो जाता है और वह अंबिया अलैह अस्सलाम के वारिस हकीकी हो सकते हैं कयामत के दिन वह लोग खास तौर पर मुमताज नजर आयेंगे यह बातें इल्में जाहीरी से नहीं हासिल हो सकती इसमें शक नहीं कि इल्मे बातिनी के लिए इल्म जाहिरी की भी सख्त जरूरत है। अगर उलमाए जाहिर बातिनी के भी उलमां होंगे तो अंबिया अलैह अस्सलाम के हकीकी वारिस हो सकते हैं वरना नहीं क्योंकि उन लोगों पर इनकिशाफात बातिनी नहीं खुल सकते।

हर शख्स जिस काम के लिए पैदा किया गया है। वह उसके लिए आसान हो जाता है। बारास्ते अंबिया अलैह अस्सलाम के लिए खास-खास आदमी मुंतखिब किए जाते हैं जिस इल्म को आपने हासिल कियो है। उसमें सख्त मुश्किलातें जाहीरी का सामना आपको करना पड़ा है जिसमें कल्ब में परेशानी होती रही है। और यह इल्म बातिनी वह इल्म है कि तमाम आलम के असरार इसमें खुल जाते हैं। इस इल्म से कल्ब में यकीन का मर्तबा हासिल होता है। इसमें जोज़ व रोज कल्बी तसकीन होती रहती है।

इसमें तमाम कुरआन व हदीस का खुलासा हासिल हो जाता है और तमाम अमरोनुवाही की हकीकत खुल जाती है। इसमें बहसोव मुबाहिसा नहीं है बल्कि जो इल्म

वहस व मुशाहिसा हासिल होता है वह बन्दा और खुदा के दरम्यान हिजाब हो जाता है। अलइल्म के हिजाबुल अकबर के यहीं मायनी हैं मतलब यह है कि यह एक फ़िकरा है उसके दो मायनी हैं। यह बातें जब तक इल्मे बातिन न हो हासिल नहीं हो सकती इल्म जाहिर हिजाबे अकबर है। यानि करबे खुदा वन्दी का माला है और इल्म बातिन मासवाए अल्लाह के दरम्यान में हिजाब है। यनि इस इल्म के जरिए से करब खुदा वन्दी हासिल हो जाता है तमाम हिजाबात उनके सामने से उठ जाते हैं और "इल्मतुल अव्वलिन वल आखेरिन" के परतों से यह लोग मुनव्वर हो जाते हैं।

काजी शहाबउद्दीन दोलत आबादी को जब हजरत का खत मिला तो वह बहुत मुतअस्सिर हुए। मुरीद हुये खिलाफ़त से सरफराज हुए।

मोहद की तारीफ़

एक दिन आपके खलीफ़ा शेख मुहम्मद ने आपसे पूछा कि मोहद किसे कहते हैं हजरत ने उनको बताया कि वहिद वाहिद और मोहद का माद्दा एक ही तो है। और बहुत से औलिया अल्लाह इसी हालमें हलाक हुए हैं चुनांचिह मन्सूर हलाज़।

मन्सूर हल्लाज का मुकाम

शेख मुहम्मद ने दरयाफ्त की कि मन्सूर किस मुकाम पर थे हजरत ने जवाब दिया कि यह वह मुकाम है कि

आशिक माशूक को अपने जामे में देखता है इस जामे को अपना मुजाब समझकर फाड़ डालता है। मन्सूर की यही हालत थी।

हिदायत

मीर सदर जहाँ ने हजरत से ब्यैत करने के बाद तर्क व तजरीद में जिन्दगी गुजारने का इरादह किया हजरत ने उनको ऐसा करने से बाज रहने का हुक्म दिया और उनको हिदायत फरमाई कि : बहुत सी मख़लूक़ तुम से मुस्तफ़ीज होती है। उनको महरूम न करना चाहिए खुदा के बन्दों की हाजत बरारी करो खुदा वन्द ताआला तुम्हारी हाजत बरारी करेगा तुमको मसनदे दौलत पर वह सब कुछ मिलेगा जो औरों को तर्क व तजरीद में मिलता है।

बुजुर्गी

हजरत से किसी ने दरयाफ्त किया कि इन्सान बुजुर्ग है या काबा ? हजरत ने फरमायाः—

"आदमी पर जात का परतू है और काबा पर सफ़ात का"

ताकीद

हजरत ने एक खत में अपने मुरीद को इस अमर की ताकीद फरमाई "बरादरम" दुनियाँ चन्द रोजा है आकबत का काम खुदावन्द ताआला से वबस्ता है जागो हुशियार रहो मैं यह नही कहता कि दुनिया से अलग हो जाओ जिस

काम में भी हो खुदा के साथ रहो "अल्ला बस बाकी होवस"

खुशबू

एक दिन सेब की खुश्बू की मिशाल देते हुए हजरत ने काजी मसूद से फरमाया कि ऐ अजीज इन्सान के जोहर में भी खुश्बू है अगर वह खुशबू जाहीर न हो कुछ भी नहीं है। हुस्न सूरत और इशाकबा से कुछ फायदा नही है।

कलन्दर की तारीफ

शेख मुहम्मद ने इस सवाल के जवाब में कि कलन्दर किस को कहते हैं। हजरत ने फरमाया "कलन्दर वह होता जो सफाते इलाही के साथ मुत्तासफ होता है।" जैसा कि हदीस शरीफ में आया है। "वुस्तस्नुवल बिसका तुल्लाहया तुखलवा व इखलाकिल्लह, खुदा की आदात और सफात के साथ तुमको अपनी आदत इख्तियार करनी चाहिए।

तालीम व तलकीन

शाह फजल उल्लाह जब हजरत के सिलसिला में दाखिल हुए तो आपने उनको इस राज से आगहा किया कि "ए अजीज तुमने इस कूंचा में कदम रखा है। जो एक दरियाए न पैद किनारा है जिसमें बला अन्दर बला है जो लोग होशियार होते हैं वह जराअत व हिम्मत को अपना शुआर करके पार हो जाते हैं और हयाते अबदी हासिल

करते हैं इसमें राहत व आराम को खैर आबाद कहना होता है और जीते जी मुसीबत में मुबतिला होना होता है।"

मारफत

काजी मसउद के इस सवाल के जवाब में कि मारफते खुदा वन्दी किस तरह हासिल होती है, हजरत ने फरमाया "ए मसउद ! अव्वल आपको पहचानो खुदा को पहचान लो तुमको यह ख्याल करना चाहिए कि तुम कौन हो कहाँ से आये हो कहाँ जाना है इस आलम में किसलिए आये थे और खुदा वन्द ताआला ने तुमको किसलिये पैदा किया और नेक बख्ती और बदबख्ती क्या है अव्वल तुमको इन चीजों से आगाह होना चाहिए और तुम्हारी सफात बअज हैवानी हैं बअज शैतानी बअज मलकूती तुमको यह मालूम होना चाहिए कि तुम्हारी असली सफात क्या हैं याद रखो खाना, पीना, सोना, करबा होना, गुस्सा करना यह हैवानी सफात हैं मुकरूह फरेब करना फितना बरपा करना यह शैतानी सफात हैं अगर इन सफात के तुम तावे रहोगे तो हकताआला की मारफत तुमको हासिल नहीं हो सकती है। अगर सफाते मलकूती तुम हासिल कर लोगे तो क्या अजब कि मारफते खुदावन्दी से तुम्हारा कल्ब रोशन हो जाये तुमको कोशिश करनी चाहिए कि सफाते हैवानी व शैतानी से निकलकर सफाते मलकूती हासिल करो देखो अल्लाह तालाहा ने तुमको दो चीजों से बनाया। एक बदन और

दूसरी रूह, रूह की दो किस्में हैं हैवानी और इन्सानी रूहे हैवानी तमाम जानवरों को इनायत हुई हैं और रूहे इन्सानी इन्सान के साथ मखसूद है। जब तक रूहे इन्सानी से काम न लोगे इन्सान नहीं हो सकते और न ही मारफते खुदावन्द ताआला हासिल हो सकती है।

सलिक की तारीफ

इस सवाल के जवाब में के सलिक किसे कहते हैं हजरत ने फरमाया "सलिक वह होता है कि अगर चाहे तो आसमान पर चला जाये वह हर वक्त कुरबे खुदावन्दी की जुसतुजू में रहता है।"

तल्बे सादिक

काजी हमीद ने हजरत से फरमाया, चचा और भतीजा होना और बात है और इस राह में कदम रखना और बात तल्बे सादिक का रिश्ता से कोई तअल्लुक नहीं अगर तल्बे सादिक है तो इन बातों का ख्याल न होना चाहिए यह इश्क की बातें हैं यह इश्क की रमूज हैं यहाँ छोटे बड़े का हिसाब नहीं।

तजारक

हकीम अहमद को हजरत ने इस बात से आगाह किया कि हालात को शाजगार बनाने के लिए कैहरे इलाही से बचने के लिए और बलाये आसमानी के तजारक के लिए

यह बात वह अपने शागिर्दों को बता दें कि इनको अल्लाह ताआला की दरगाह में अपने गुनाहों से तौबा करना चाहिए और एक यतीम का माल जो जुलमतन ले लिए है उसको वापिस करें और उससे अपने हक़ में दुआ करायें और अहद करें कि फिर ऐसा काम नहीं करेंगे।

मन्सूर का कत्ल

इस सवाल के जवाब में मन्सूर किस मुक़ाम में कत्ल किए गए, हज़रत ने फरमाया—उनकी वह हालत थी कि महबूब को अपने लिबास में देखते थे और उस लिबास को हिजाब समझते थे।

इश्क

एक दिन इश्क़ की बाबत बातचीत हो रही थी हज़रत ने वालहानए अन्दाज में यह शेर पढ़ा—

बुनियाद करदए कि गनी खानहा खराब
ए खानमां खराब चेह बुनियाद करदा

दुनिया की हकीकत

इस सवाल के जवाब में कि इस दुनियाँ के कारखाने की हकीकत क्या है जवाब तक न मालूम हो सका और यह जो कहा जाता है कि यह कारखाना अदम से वजूद में आया और फिर वजूद से अदम में चला जायेगा आखिर इससे क्या मतलब है यह शेर पढ़ा—

क़लम बरकन स्याही रेज कागज सौज दम दरकश
हुस्नऐन किस्सा इश्क अस्त दर दफ्तर नमी गनजद

एक मौका पर आपने फरमाया—

मरो माबूद मखलूक नहीं है
बल्कि वह खालिक "वादहु लाशरीक है"

जो कुछ तुम लोग देख रहे हो सब उसी का पैदा किया हुआ है मैं खुदा का एक अजिज बन्दा हूँ जो इसके अहकाम तुमको पहुँचा रहा हूँ।

अक़वाले ज़र्री

हजरत कभी-कभी फरमाया करते थे वहदत नुक्ता से ज्यादह नहीं है मौहद और वाहेद एक है दिल की हिफाजत करो किसी बे अदब को खुदावन्दी दरबार में रसूख नहीं हुआ, तसव्वुफ की किताबे पढ़ने से यह इल्म हासिल नहीं होता यह इल्म तो सीना बसीना हासिल होता है। मेरा मबूद एक है।

अजकार व अशगाल

हजरत शाह मदार रह० ने अजकार व अशगाल में जिन्दगी का बड़ा हिस्सा गुजारा आपका शुगल जिस दम मशहूर है हजरत जिस दम ख़ुद भी करते थे और मुरीदों को भी इसकी तालीम व तलकीन फरमाते थे जिस दम खतरात के दूर करने के लिए बहुत मुफीद है जिस दम सांस रोकने

को कहते हैं अगर जिस दम की मश्क व कायदा पाबन्दी से की जाये तो सांस को काफी देर तक रोका जा सकता है। जिस दम उम्र को बढ़ाता है हजरत ने शुगले हयात अब्दी भी किया है और इसके फवाइद से मूरीदों को आगह किया करते थे सफाते बशरीयत से बाहर होना जरूरी है। बगैर इस फना से गुजरना मुश्किल है फना से गुजर ही बका में कदम रखना होता है।

हजरत ने चिल्लाकशी में भी दिन गुजारे हैं आपने अपने खास-खास खुलफाए को भी चिल्लाकशी की ताकीद फरमाई है। आप ऐसी जगह चिल्ला खिचते थे जहा लोगों का आना जाना न होता था चिल्ले के लिए आप ऐसी जगह मुनतखिब फरमाते थे जहाँ सुकून हो और जहाँ दिल को खतरात से निजात हासिल हो आप खुलूत पसन्द थे और खुलूत को रूहानी मदारज तय करने के लिए समझते थे आप मुराकबा में यकसूई कैफ व सर दर और रूहानी इन-बिसात तलाश करते थे ख्यालात व जमा हवास को तावे करने के लिए मुराकबा अज बस जरूरी है मुरकबा हसूले ब्यैत के लिए भी जरूरी है मुरकबा से सोया हुआ दिल बेजार हो जाता है। और आँखें सो जाती हैं दिल में रोशनी और आँखों में सरूर पैदा होता है। मदारिया सिलसिले में रात को जागने और दिन को रोजा रखने के फवाईद पर भी जोर दिया गया है। बगैर मुजाहिदह के मुशाहिदा नहीं

होता इस सिलसिले में तहज्जुद की नमाज जिक्र इस्मेजात हल्का बिलजहर "ला इला" की जरब कशी से दिल को साफ करने और "इल्लल्लाहा" से दिल के चिराग को रोशन करने के मामूलात भी राईज हैं जिक्र पास इन्फास इस सिलसिले की एक खुसूसियत रहा है। जिक्र एक जरबी तचहार जरबी की भी हिदायत की जाती है। जिक्र इस्मे जात भी राइज है।

हल्कए इरादत

हजरत शाह मदार रह० का सिलसिला ब्यैत व इरशाद बहुत वसी है हजरत के मुरीदों की सही तादाद के मुत-अल्लिक व सौक से कुछ नहीं कहा जा सकता लेकिन यह बात जरूरी है कि इनकी तादाद बहुत काफी थी इनमें से बअज को हजरत ने खिलाफत अता फरमाई बअज के नज़-दीक हजरत के खुलफाए की तादाद चार सौ बिलालिस थी बअज का ख्याल है कि आपके खुलफाये की तादात इससे कहीं ज्यादह थी जहीरउद्दीन इलियास ने हजरत के खुलफाए की तादाद एक लाख चौबीस हजार बताई है।

हजरत ने अपनी हियात जाहिरी में सैय्यद मुहम्मद अरगून सैय्यद अबूतुराब फन्सूर और सैय्यद अबुउल हसन तौफूर को अपना जा नशीन और सज्जादह नशीन मुकर्र फरमाया था हजरत इन तीनों भाईयों के मुताअल्लिक फरमाया था कि वह यके बाद दिगर आपके जा नशीन

होंगे यह तीनों भाई हज़रत के एक रिश्तेदार सैय्यद अब्दुल्ला हलबी के साबजादे थे यह तीनों भाई हजरत के सूरी व मनवी फरजन्द थे इन तीनों हजरत को अहल लुलल्लाह कनफ़स वाहिद मानते है। और एक ही लक़ब से तीनों हजरात पुकारे जाते हैं "ग्रिरोह खादभान" इनही हजरत से व वस्ता थे इन तीनों हजरात की औलाद और औलाद की औलाद और वबस्तगान "खादमान" के लक़ब से पुकारे जाते हैं वह "खादमाने" मदारी होने पर फखर करते हैं।

हज़रत ख्वाजा सैय्यद अबू मुहम्मद अरगून

हज़रत शाह मदार रह० के विसाल के बाद हज़रत ख़्वाजा सैय्यद अबू मुहम्मद अरगून हजरत के सज्ज़ादह पर रोनक अफ़रोज हुए हजरत शाह मदार रह० ने आपको अरगून के लक़ब से सरफ़राज फ़रमाया था और आप इसी लक़ब से मशहूर हुए नरंजी रंग अरगून कहलाता है। आपकी शादी सादात के एक घर में सैय्यद अहमद की साबजादी जन्नतबीबी से हुई वह ज़ैहदो इबादत के लिए मशहूर थी आप जिक्र बहुत करते थे और दरूद शरीफ का विरद रखते थे आपकी आवाज में कशिश थी एक शाह हामिद असफ़ाहानी आपकी खिदमत में जो हाजिर हुए तो वह अज खुद रफ्ता होगए आपने उनको अपने सीना से लगाया सीने से लगाना था तो उनकी वह वजदानी कैयफियत जाती रही आपका मजार मखनपुर में है।

हजरत सैय्यद अबू उलहसन तौफूर

हजरत शाह मदार रह० आपको तौफूर की लक़ब से पुकारा करते थे तैफूर एक कबूतर को कहते हैं। जिसके मुताआल्लिक़ यह मशहूर है कि वह बहुत ऊँचाई पर उड़ता है आप मुकामाते सलूक बहुत जल्द तैय कर लेते थे इसी वजह से आपके पीरो मुरशिद आपको तौफूर कहा करते थे आपने दो अक़्द (शादी) किये आपकी अहिल्या बीबी अच्छी जहिदा और अबिदा थी आप जामा करामात थे इबादत, रियाजत और मुजाहिजात में अपनी मिसाल आप थे आप से लोगों ने एक मर्तबा बारिश होने की दुआ करने को कहा आपने जो दुआ के लिए हाथ उठाए तो ऐसी बारिश हुई जो चन्द साल से कभी नहीं होती थी।

हजरत सैय्यद अबू तूराब कन्सूर

आप हजरत सैय्यद अबू मुहम्मद अरगून और हजरत सैय्यद अबू उलहसन तौफूर के भाई थे आप "मुल्कुल इश्क़" के लक़ब से मशहूर थे आप जामए उलूम सूरी व मनवी थे। आपकी शादी देहलवी में मुल्क सैय्यद खानदान का साहबजादी शुक्र मदर उर्फ शुक्र पारा से हुई आपने दूसरी शादी अपने खानदान में सकीना बानों से की। हजरत के खुलफाए में हर किस्म के लोग थे बअज किसी वजह से मुमताज थे तो बअज किसी वजह से मशहूर थे हजरत के चन्द मुमताज व मारुफ खुलफा का मुख्तसिर जिक्र जैल है।

हजरत काजी महमूद

आपका वतन कन्तूर था हजरत शाह मदार रह० जब जौनपुर से रवाना होकर कन्तूर में रौनक अफरोज हुए आपने वहाँ एक मसजिद में कयाम किया जब नमाज का वक्त हुआ तो आपने नमाज बा जमाअत अपने खुलफाए के साथ पढ़ी थोड़ी देर के बाद काजी महमूद मसजिद में आये तो उन्होंने हजरत को और हजरत के मुरीदैन व मुअतकदीन को वहाँ बैठा देखा जब काजी महमूद नमाज के लिये खड़े हुए तो हजरत और हजरत के साथ जो लोग थे वह नमाज में शरीक नहीं हुए काजी महमूद को जब यह मालूम हुआ कि उन्होंने नमाज पहले ही पढ़ली तो वह बरहम हुए हजरत ने उनसे फरमाया कि नमाज अव्वल वक्त पढ़नी चाहिये जैसा कि हदीस शरीफ में ताकीद की गयी है। काजी साहब को जब हजरत का नाम मालूम हुआ तो सोच में पड़ गये कुछ अर्से पहले वह हजरत शेख अबू उल फतहशत्तारी के पास गये थे और उनके हल्कए इरादत में दाखिल होने की इस्तेदा की थी उन्होंने काजी साहब को बयैत नहीं किया और उनको बताया कि उनका हिस्सा हजरत शाह मदार के पास के है और वह अनकरीब कन्तूर आने वाले हैं इतना याद आना था कि काजी साहब माफी के ख्वास्तगार हुये बयैत के आरजूमन्द हुये और मशरफ बयैत से मशर्रफ हुये रियाजद व मुजाहिद में मशगूल हुये और खिलाफत

से सरफराज हुए काजी साहब "तेग बरहना" और गर्गे दानिशमन्दां के अलकाब से मशहूर हुये वह गिरोह तालिबान में मुमताज दरजा के मालिक हैं उनके साबज़ादे हजरत मीठे मदार इल्मे जाहिरी व बातिनी में यकताये रोजगार थे उनके तसरफात उनकी रुहानी आज़मत के शाहीद हैं। उनका नाम हज़रत शाह मदार रह० ने रखा था।

हजरत सैय्यद अजमल जौनपुरी

हजरत सैय्यद जौनपुरी एक खाते पीते घराने में पैदा हुए इल्मे इन्साब में आपको कमाल हासिल था आपने सिलसिले की तरक्की व इशाअत में नुमायाँ हिस्सा लिया आपका मजार जौनपुर में वाकिया है।

हजरत सैय्यद जमालउद्दीन

आपका नाम सैय्यद मुहम्मद है। आप जमालउद्दीन के नाम से मशहूर हुए एक दिन हजरत शाह मदार रह० ने आपको "जानेमन जन्ती अस्त" के अलफाज से जो पुकारा तो इस रोज से आप "जन्नती" के लकब से मशहूर हुये आपको सैय्यद जमालउद्दीन जानेमन ज़न्नती भी कहते हैं बअज लोग आपको मीर चमन जन्नती भी कहते हैं आप हज़रत के सिलसिले में दाखिल हुए और खिलाफत से सरफराज हुये और सद्दावे मुजाज हुए आप एक सूफी साफी एक आलम व अमल और एक दुरवेश कामिल थे। आपके मूरीद और

खुलफाए बहुत ही गिरोह दिवान्गान आप ही से जारी हुआ इस गिरोह से और कई गिरोह जारी हुए जिनमें दिवानगासे हुसैनी, दिवानगाने सुलतानी और दिवानगाने रशीदी मशहूर है। खुदावन्द ताआला ने आपकी उम्र में काफी बरकत दी थी एक मुद्दत तक रश्दो हिदायत में मश्गूल रहे और फिर दाइये अजल को लब्बेक कहा।

हजरत सैय्यद ताहीर

आप हजरत शाह मदार रह० के साथ सफरो हिजर में रहते थे आप हजरत के साथ मावरायनहार में भी थे। आपके मुजाहिद का आपका यह आलम था कि नीम के पत्ते खुश्क करके इनको हफ्ता में एक बार खाते थे।

हजरत मौलाना हस्सामउद्दीन सलामती

हजरत मौलाना हस्सामउद्दीन सलामती आफताबे मदारीयत की किरणों में बहरोह वर हुए हजरत शाह मदार रह० के मुरीद हुये और खिलाफत के मनसब पर फाइज हुए एक दिन आप पर शौके दीदार हजरत शाह मदार गलिब हुआ तो गलबा शौक से बेकरार और बेताब होकर हजरत के हुजरा में बगैर इजाजत के दाखिल हुये।

हजरत को आपकी यह बात नाग्वार गुजरी हजरत ने उनसे फरमाया—

"ऐ हस्सामउद्दीन हिच बे अदबे व खुदा न रसीद"

यानी ऐ हस्सामउद्दीन कोई बे अदब खुदा तक नहीं पहुँचता मौलाना ने यह सुनकर अर्ज किया कि—

"मन अदब करदे अज जमाल अल्लाह महरूम बूमद"
"अकनू के तरके अदब करदम ब खुदा रसीदम"

यानी मैं अगर अदब करता तो अल्लाह के जमाल से महरूम रहता अब जबकि मैंने अदब नहीं किया तो मैं खुदा तक पहुँच गया।

मौलाना का यह जवाब सुनकर हजरत खुश हुए और उस खुशी की हालत में हजरत की जुबाने मुबारिक से "सलामती सलामती" के अलफ़ाज निकले हजरत के इस फरमान से मौलाना ख्वास व अवाम में सालमती मशहूर हुए।

हजरत काजी सैय्यद सदरउद्दीन मुहम्मद

हजरत काजी सैय्यद सदरउद्दीन मुहम्मद के वालिद सैय्यद रुकनुद्दीन देहली सकूनत तर्क करके जौनपुर में रहने लगे दर्स निदरीस उनका शुगला था काजी साहब ने फ़ारिग तहसील होने के बाद अपने वालिद की जगह भी काजी साहब का रुजहान शुरू से ही इल्मे बातिनी की तरफ था एक रोज आपने एक ख्वाब देखा और वह ख्वाब आपकी जिन्दगी में काया पलट का बाईस हुआ आपने ख्वाब में एक बुजुर्ग को देखा कि उन्होंने दरस व तदरीस का सिलसिला

खत्म कर दिया किताबों में आग लगा दी जिसकी वजह से बदन तो बदन लिबास भी जलकर खाक होगया और टोपी भी सलामत नहीं रही जौनपुर में एक बुजुर्ग शाह कालू रहा करते थे वह ख्वाब की ताबीर लेने की गर्ज़ से उनके पास गये शाह कालू ने आपसे फरमाया कि तुम्हारे ख्वाब की ताबीर यह है कि तुम कालपी में जाओ वहाँ कुतुब मदार तुम्हारा इन्तिजार कर रहे हैं काजी साहब कालपी पहुँचकर हज़रत शाह मदार रह० की खिदमत में हाजिर हुए हजरत के हलकए इरादत में दाखिल हुए और खिरकए खिलाफत में सरफराज हुये हजरत के पीरो मुरशिद ने आपको पास बैठाकर अलका निस्बत किया और चालीस रोज तक आप को चिल्ले में बैठाया आपने अपने पीरो मुरशिद की तव-ज्जह से बहुत जल्द मुकामात तै किये और इश्के इलाही में अपने सरशार और मदहोश हुये कि आपको खबर न रही बीस साल इसी हालत में गुजारे सफर में अपने पीरो मुर-शिद के हमरकाब रहे और मकनपुर में हजरत की खिदमत में जिन्दगी के आखिरी अय्याम गुजारे।

हजरत शेख मुहम्मद लाहोरी

आप एक जय्यद आलम थे हाफिजो कुरान थे वाज कहा करते थे हज के इरादे से रवाना हुये गुजरात पहुँचकर आप हजरत शाह मदार रह० की खिदमत में हाजिर हुये उनके जमाले जहाँआरा से ऐसे मुताअस्सिर हुये कि बस उन्ही के

ही लिए सब माल व मुता खैरात कर दिया। हजरत के मुरीद हुए और खिलाफत पाकर सिलसिले की तब्लिग में मशगूल हुए आप हजरत शाह मदार रह० की खिदमत में सात साल रहे।

मौलाना शेख फौलाद

आपका वतन काल्पी था हजरत शाह मदार रह० से ब्यंत की और खिलाफत पाई हजरत के विसाल के बाद आपने हजरत के रोजे की मुजावरत की मखनपुर में आपका इन्तिकाल हुआ मखनपुर में आपका मजार वकिया हैं।

शेख भिखारी मजजूब

आपने हजरत शाह मदार रह० से ब्यैत की और बअज अजां खिलाफत से सरफराज हुए आप हर वक्त जज्बारा की हालत में रहते थे आपका मजार कन्नौज में वक्रिया है।

शेख मुहम्मद

आप भी हजरत शाह मदार रह० के खलीफो हैं आप का हर वक्त जज्बाए की हालत तारी रहती थी आपका मजार बदायूँ में हैं।

शेख इलियास

आप तिजारत करते थे गुजरात के रहने वाले थे आप को अमलयात से काफी दिलचस्पी थी सहिबे दावत थे आपने उलूम जाहिरी हासिल करने में चन्द साल गुजारे बाअज

उनके पास जाओ और उनसे ब्यैत करो उनका नाम सैय्यद बदीउद्दीन हैं और मदार के लकब से मशहूर हैं।

आपने हजरत शाह मदार रह० की खिदमत में एक अरजिया भेजा जिसमें कालपी में हाजिरे खिदमत में होने की मुखदात चाही हजरत ने उनको मत्तला किया कि वह खुद अनकरीब जौनपुर पहुँचेंगे जब हजरत जौनपुर पहुँचे तो आप (मीर सैय्यद सदरं जहाँ) आपकी खिदमत में हाजिर हुए और हजरत के सिलसिले में दाखिल हुये और बाज़ अर्जा मनसब खिलाफ़त पर फाईज हुए।

जब हजरत मखनपुर में रहने लगे तो आप पावन्दी से हर माह हज़रत की खिदमत में हाजिरे हुआ करते थे आप अपने पीरो मुरशिद के विसाल के बाद तीन साल जिन्दह रहे।

हुस्ने सीरत

हजरत शाह मदार रह० "दिल बियारो दस्तबकार" के मक़सद थे यादे इलाही आपका सरमायाए हियात था, आप इबादत, रियाजत, मुजाहिदह, फिकरो फाका और तर्क व तजरीद व तक़रीद में बे नजीर थे, उलूमे जाहिरी व बतिनी से आरास्ता थे इल्म किमा, मसीहा और रिमीया से बखूबी वाकिफ थे।

आप बहरे मारफ़त में ऐसे महू व मुस्तकरिक थे कि बअज औकात आपको अपनी खबर न होती थी आप साहिबे

आजमत व विलायत थे आप सफ जुबान मशहूर थे दुनियाँवी अलाईश से यकसीर पाक व साफ थे न कोई ख्वाहिश थी और न कोई आरजू थी हसद, बुगज, इनाज लालच, गुरूर और तकब्बुर से आपका सीना बे किना पाक व साफ था जाह व मनसब को बुतपरस्ती से ताबीर करते थे आपका इखलाक़ हमीदह और आपके औसाफे स्तूदह लोगों के दिल जीतने के लिये काफी थे आपके हुस्न और इखलाक ने लोगों को आपका गिरोदीदह बना दिया था आपकी सिफाते फसन्द दीदह काबिले तकलीद समझी जाती थी।

आप इस आलमे रंग व बू से बे नियाज बे परवाहा और बे तअल्लुक थे आपकी बुजुर्गी और आपके सही बे निसबत होने को हर शख्स मअतरफ था लोग दूर-दूर से आपकी खिदमत में हाजिर होते थे और आपके हाथ से शर्बते इरफान का जाम पीकर मदहोश व सरशार होते थे आपके काने फेयूज से गौहरे मुराद चुनकर खुदा का शुक्र बजा लाते थे आपके सामने दामने मकसद फैलाते थे और ब मुराद और शाद काम खन्दां व फरहां वापिस हो जाते थे।

आप हाजतमन्द की हाजत खाई और लोगों की रहनुमाई में कोशाँ रहते थे आप सब्रो शुक्र का मुजस्सिमा थे।

आपने अपनी ज़िन्दगी का बड़ा हिस्सा सैरो सियाहत में गुजरा न कोई घर बनाया और न ही घरेलू ज़िन्दगी

से रोशनास हुए आप जब मखनपुर में रहने लगे तो आपके मुरीदेन व मुअतक़दीन ने आपके कयाम के लिए एक इमारत तामीर की वह इमारत आपके लिये क्या थी आपकी निगाह में इसकी हैसियत रैन बसेरे से ज़्यादा नहीं थी इल्म के अलावा आपको इश्क़ और अकल की दौलत से भी नवाजा गया था बुर्दबारी तहम्मुल, इन्किसारी, अजीजी और तवक्कल में अपनी मिशाल आप थे आपकी महवियत और इस्तगराफ आपकी नुमायाँ खुसूसियात थीं आपने कई हज किये और कई बार आंहजरत स्वल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के रोजाए मुनव्वरा पर हाज़िर हुए और सरवरे आलम स्वल्लल्ला हो अलैहे वसल्लम के फ्यूज़ व बरकात से मुस्तफीज़ और मुस्तफीज हुए।

हजरत जिस दम बहुत करते थे जिस दम के लिए यह कहा ज़ाता है कि खतरात के दूर करने के लिये मुफीद है ज़िस दम से यकसूई हासिल होती है। ज़हाँ तक ज़िस दम का तअल्लूक है इसमें कोई शक नहीं जैसा कि कहा गया है "बातन के गरम कर देने और ज़मीयअत आज़मीयत और इश्क के उभारने और व स्वास के कतह करने में" मुफीद है ज़िस दम के चन्द शराईत है ज़िन पर हजरत शाह मदार रह० कारबन्द रहे हजरत ख्वाजा बन्दा नवाज गैसू दराज रह० फरमाते हैं कि औरत से परहेज करना जरूरी है खाना पीना बकदरे जरूरत हो फजूल बातों से भी बचना जरूरी

है। हजरत शाह मदार की चिल्लाकशी भी मशहूर है आपने बहुत से चिल्ला खींचे चिल्ला में आप जब बैठते तो ब वजु बैठते थे किबला की तरफ मुंह करके बैठते थे आप खुलूत पसन्द थे और चिल्ला में आपको खुलूत हासिल होती थी जो आपके लिए रूहानी इनबिसात बाइस होती थी। हजरत मुराकबा भी करते थे मुराकबा क्या है इसके मुता-अल्लिक हजरत ख्वाजा बन्दा नवाज फरमाते हैं मुराकबा गैर खुदा के खतरा से दिल की हिफाजत करने को कहते हैं मुराकबा का तरीका यह है कि खुलूत में बैठकर लफ्ज अल्लाह दिल में इस तरह बैठाये जिस तरह खतरा और वसवसा दिल में कायम होता है अल्लाह ही दिल में आये और अल्लाह ही दिल से निकले हजरत की उम्र ३९६ साल की हुई लेकिन यह कोई तअज्जुब की बात नहीं है।

आप जिस दम बहुत करते थे जिस दम करने से उम्र बढ़ जाती है। आपके और भी लोग हुए हैं। जिन्होंने तवील उम्र पाई हजरत शाह मदार रह० की खाने पीने की ख्वा-हिश बाकीं नहीं रही थी।

आप रूही गिज़ा के आदी होगए थे वह रूही गिजा क्या थी वह थी जिक्र जिसमें आप हमावक्त मशगूल रहते थे आपका लिबास न बो सीदाह होता था न कहना होता था और न मैला होता था आपके जिस्म से ऐसी दिलाबीज खुश्बू आती थी जो कहीं नहीं पाई जाती थी यह कहा जाता

है कि आपके जिस्म पर मक्खी नहीं बैठती थी आपकी नजर कीमा असर थी आपके चेहरा पर हर वक्त नकाब रहती थी बिला खौफ तरदीद यह कहा जाता है कि "गराइब अहवाल" अजाईब हतबार, बुलन्द मुकामात और करामात अरजुमद के आप मलिक थे और हज़रत शाह मदार रह० की बुजुर्गी इससे कहीं ज्यादह है कि वह तहरीर और तकरीर में आ सके कहते हैं कि आपने बारह साल खाना नहीं खाया और लिबास जो आप एक बार पहन लेते थे उसको दोबारा धोने की जरूरत नहीं होती थी वह हमेशा सफेद और पाक.जा रहता था आपके मुतअल्लिक यह भी कहा जाता है कि "जिस किसी की नजर आपके जमाल पर पड़ती बे इख्तियार सिज्जदह करता था" हजरत को खाने पीने की ख्वाहिश न होने की वजह यह बताई ज़ाती है कि जब हजरत अपने वालिद से इजाजत लेकर हज के लिए और आंहजरत स्वल्ल-ल्लाहो अलैहे वसल्लम के रोजए मुबारिक की जियारत के लिए रवाना हुए तो रास्ता में आपने एक गार में कयाम फरमाया खुलूत को सलामती समझ कर आप उस गार में एक मुद्दत तक रहे और वहाँ रहकर शुगले हयाते अब्दी में मशगूल हुए यहाँ तक कि वह जिक्रे इलाही आपकी गिजा होगई शेख ईसा जौनपुरी ने जब आपसे खाने पीने की रग-बतन होने की वजह दरयाफ्त की तो आपने उनको यह बताया कि जिक्रे इलाही और तिलावते कुरान मजीद व

फुरकाने हमीद इस तौर से करना चाहिए कि न कूश हुरूफे कलमात शरीफ कुव्वते जिस्म अनसरी और मजमून पाक कुव्वते रूह हो जाये सो मुझको अता फरमाई एक वजह यह भी बताई जाती है कि आपको दीदार खुदा बन्दी हासिल था और इसमें ऐसे महू थे कि आप फानी चीजों से दूर रहते थे बअज लोगों के यह पूछने पर कि आपको खाने पीने की ख्वाहिश क्यों नहीं होती हजरत उनको इस तरह जवाब देते थे।

"अय्याम कहत में हजरत यूसूफ अलैहे अस्सलाम की जियारत से छैः माह तक ख़्वाशे भूख की न होती थी पस अगर मुताफरिक मारफत करदगार अनवारे तजल्लियात के परवरदिगार में महू दर महू और तआमे अलकूती इश्का गिजा हो जाये तो क्या अजब और सालिक मुकाम समदीयत में जब पहचानता है। तो इससे पाबन्दी सत्ता जरूरीया की तरक हो जाती है आपको खाने पीने की ख़्वाहिश न होने और आपका लिबास मैला और कोन्ह बा होने की एक और बजह बताई जाती है हजरत जब बन्दर खहमाज बाला कोह जर निगार पहुँचे तो वहां बतौर रूहानी आंहजरत स्वल्ले ल्लाहो अलैहे वसल्लम ने आपको नो लूकमा शोर बरजं के खिलाए और बख्शती लिबास पहनाया और आपसे इरशाद फरमाया ऐ नुरउलएन। खुश होकर तुम्हारी खुश नसीबी ने यह दिन दिखाके अब तुमको ख़्वाहीश आब व तआम और

दीनवी लिबास पहनने की जरूरत न होगी और लिबास हमेशा यूंही आब न ताब रहेगा और इसको कभी गुसल की हाजत भी न होगी और इसमें कगी के आसार पाये जायेंगे और आज मलिके हकीकी ने तुमको शरबत "व इन्नका लआला खुलूकिन अज़ीम" से सेराब करने के बाद फरके अजीज़ को ताज व इखलाक अल्लाह से मजीन फरमाया अब तुम मनअम हकीकी में ख़ज़ूअवख़शूअ के साथ वजआऐ (अजउनी असतजब लकुम) के यह मुनाजात करोकि यह तमाम ख्वाहिशात दिनवी से मुजीबुद्द अवात मुझे मुब्बराउ मुनज्जा फरमादे चुनाचिह आंहजरत स्वल्लल्लाहे अलैहे वसल्लम के फरमान के मुताबिक आपने दुआ की आपकी दुआ कुबूल हुई और आपकी खाने पीने की ख्वाहिश जाती रही और आपका लिबास न कभी मैला हुआ और न कभी कुन्हा हुआ एक दिन हजरत के खलीफा हजरत मौलाना काजी मतहर किला शहर ने आपसे यह सवाल किया कि आपको खाने पीने की रगबत क्यों नहीं इस सवाल के अलावा काजी साहब ने आपसे यह भी दरयाफ्त किया कि आपने शादी क्यों नहीं की हजरत ने उनको जवाब दिया वह यह था (अद्दुनियाँ यौमो वलना फिहिया सौमू) यनि दुनियां एक दिन है और मैं इसमें रोजादार हूँ हजरत ने दुनियां को एक दिन बताया तो फिर ऐसी ना पायेदार और

एक दिन की दुनियां में खाना पीना कैसा और शादी कैसी हजरत का इस फरमागे से रोजा के शराईत की तरफ इशारा था। रोजा में नियत शरत है। दिन में खाना पीना जाईज नहीं रोजा की हालत में औरत से दूर रहना जरूरी है। पस जब हजरत रोजादार थे जैसा कि आप ने खुद अपने मुता-अल्लिक फरमाया, तो रोजा की शराईत की पाबन्दी वाजिब थी इसलिए खाना पीना तर्क किया वरना ही आपने शादी की आपके इस फरमाने से आपका मतलब यह भी था कि रोजादार का रोजा दिन में होता है। रात में रोजा नहीं होता चौंकि आपने दुनियाँ को एक दिन तस्व्वुर किया और खुद को रोजादार बताया इसलिए खाने पीने का सवाल ही नहीं और नहीं शादी की ख्वाहिश मुखतसिर यह कि आपका मशरब सुलह कुन था आपका मसलक इन्सान से दोस्ती था आपके न कोई जोजा थी न ही आपके पास जर था और न ही जमीन थी आप दुनियाबी आलाईश से पाक व साफ थे आपके लिए इरफान की दौलत काफी थी।

जाह व मर्तबा

हजरत शाह मदार रह० रूहानियत के आसमान पर एक रोशन सितारा थे। आप गराईब अहवाल व अजाईब अतवार से आरास्ता व पैरास्ता थे, मुकामाते बुलन्द पर फाईज थे आपकी करामाते अरजुमन्द का जमाना शाहीद हैं। गरज हजरत शाह मदार की बुजुर्गी इससे कहीं ज्यादह है

कि वह तहरीर व तकरीर में आ सके आप मदारिया सिलसिले के मुब्दा व मनशा है और आपका सिलसिला बसबब दराजी उमर या किसी और वजह से पाँच छः वास्तों से हजरत रिसालत माआब स्वल्लल्ला हो अलैहे वसल्लम पर तक पहुँचता है। सलूके मदारी का आगाज आपसे हुआ आप उव्वैसिया निस्बत से सरफराज थे आप मुक़ाम समदियत पर फाईज थे इस मुक़ाम के लिए यह कहा जाता है कि यह मुकाम सलिको के मुक़ामात में से है।

आपके मुतअल्लिक़ यह मशहूर है कि खुदा वन्द तआला ने आपको ऐसा जमाल व कमाल अता फरमाया था कि जिसकी नजर आपके चेहरा मुबारक पर पड़ती वह फौरन सिज्जदह में गिर जाता था इसी वजह से हजरत के चेहरए मुबरिक पर हमेशा नक़ाब रहती थी। हजरत को अपने जमाने का कुतुब मदार होने का एजाज व फखर हासिल था कुतुब मदार वह होता है। जिसको इस्मबारी अ सासमा और सफाते बारी ताआला से पूरा-पूरा हिस्सा मिलता है। वह इन्सान कामिल होता है। तमाम अशिया भी असल होता है। सब इसके ताबै व फरमान होते हैं यही फर्द अला फर्द के नाम से पुकारा जाता है।

हुजूर सरवरे आलम स्वल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से बिला वास्ता फ़ैयूज हासिल करता है। कुतुब शाह मदार के मुताअल्लिक यह मशहूर है कि इसकी उम्र ज्यादह होती है।

और वह सलूक में तरक्की करके मुकामे वहदत यानी महब्वियत पर पहुँचता है। कारगाहे आलम में इसका हुक्म चलता है। इसकी मरजी के मुतअिल्लक यह कारखानाए हियात चलता है। कुतुब मदार के मुतअल्लिक यह भी है। कि यह मर्तबा तमाम मुरातिबे विलायत से अफजल है। और कुतुब मदार से तमाम जिन व इन्स व मखलूक उलवी व सिफली फैजियाब हैं। हजरत के मुतअल्लिक बहुत-सी बातें मशहूर है। मदारिया सिलसिला में कुछ असतलाहात राइज हैं यह मशहूर है कि "मरे को मारे शाह मदार" बाअज लोग इसको इस तरह भी कहते हैं कि मरते को मारे शाह मदार आम लोग इससे यह समझते हैं कि जब कोई शख्स किसी तकलीफ या मुसीबत में गिरफ्तार होता है। या वह जो रूस्तम का निशाना हो या इस पर जुल्म किया जा रहा हो तो हज़रत शाह उसकी तकलीफ और मुसीबत में अज़ाफा कर देते हैं। और बज़ाए इसको मुसीबत से निजात दिलाने के उस पर अरजे हियात तंग कर देते हैं। लोग कहते हैं। "मरते को मारे शाह मदार" या मरे को मारे शाह मदार रह० बहुत ही कम लोग ऐसे है। जो इसके मायनो और मुजम्मरात से वाकिफ हैं। इसके मायनी यह है कि हजरत शाह मदार रह० को यह कुदरत हासिल थी कि सूफियाए कराम को जो मर्तबा फना में होते थे आप इनको मरतबा फना से निकाल कर मरतबा फनाए फना के आला मुकाम

पर पहुँचाकर उनको मुकाम बकाबिल्ला से सरफराज फरमा दिया करते थे। उनको तैसीनात से निकालकर मुकामुल्ला तैय्यन पर फाईज कर दिया करते थे फनाए फना के मायनी यह हैं कि फना का एहसास तमीज और पता न रहे और मुकाम बका में शादो व फरहो रहने लगे।

"जिन्दह शाह मदार"

"हजरत जिन्दह शाह मदार" के लकब से मशहूर हैं इसके मायनी यह नहीं हैं जैसा कि नादान लोग समझते हैं कि हजरत को जिसदम की हालत में कब्र में रखा गया कब्र में आपने आँखें खोली और फिर बन्द करली और इसी हालत में आपको जिन्दह दफन कर दिया गया।

इसके मायनी यह हैं कि आप अपने नफस से बरसरे पैकार रहे और अपने नफस पर गालिब आये यह जिहादे अकबर है। जिहादे अकबर में फतेहमन्द होना और कामयाब व कामरो होना हियाते अब्दी का मुबज्जिब होता है। सर पर हियाते अब्दी का ताज होता है। हजरत शाह मदार के सर पर यह ताज जैब देता हैं।

हकअल्ला मुहम्मद मदार

मदारिया सिलसिला के अफरादे जब एक दूसरे से मिलते हैं तो "हक अल्ला मुहम्मद मदार" कहते हैं जिसका मतलब यह होता है कि जो कुछ अल्लाताआला ने हजरत

मुहम्मद मुस्तुफा स्वल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हजरत शाह रह० ने फरमाया वह सही दुरूस्त है। वह पेरवी के लाईक हैं पस अल्लाह की हजरत मुहम्मद स्वल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की और हज़रत शाह मदार रह० की पेरवी अताअत और फरमां बरदारी लाजमी और जरूरी है।

इसके मायनी एक और भी हैं। इसके कहने से यह मकसद होता है कि फना "फिल्ला" और फना फिर्रसूल का मर्तबा हरगिज हासिल न होगा जब तक फनाफिलशेख न होंगे फनफिल शेख से उनकी मुराद फनाफिल उल मदार होती है।

"दम पीर शाह मदार"

मदारिया सिलसिले में "दम पीर शाह मदार" ने एक इसतलाह की सूरत इख्तियार करनी है "दम" से उनकी मुराद सखन होती है इसके मायनी यह है कि वह लोग हर वक्त व हमालहज शाहमदार रह० की अताअत और फरमा बरदारी में आमादह व तैयार रहकर अल्लाह और इसके रसूल सरवरे आलम हजरत मुहम्मद मुस्तुफा स्वल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की खुश्नूदी हासिल करने में कोशाँ व मशगूल रहते हैं।

"दम पीर शाह मदार" आंखों की रोशनी दिल को करार

"मुखातिब "दम पीर शाह मदार" का जवाब "दमपीर

शाह मदार आँखो को रोशनी दिल को करार" कह देते हैं इससे इनका मतलब यह होता है कि हम तुम्हारी नसीहअत पर अमल करते हुए, गुरूर खुदी, हसद, बुगज, लालच व किना से खुलासी पाकर मर्तबाए फनाफिलमदार के हासिल करने में कोशाँ हैं वह यकीन दिलाते हैं कि फिकर की कोई बात नहीं हैं। तुम मुतमईन रहो हम हर वक्त शिजराए उव्वैसिया मदरिया याने हक्क अल्लाह मुहम्मद का विर्द रखते हैं जिस तरह से काजी सैय्यद महमूद कन्तूरी इस विरद में मशगूल रहते हैं। इसी तरह हम भी इस विर्द में मशगूल हैं पस हमारे दिल की आँखों को रोशनी हासिल हैं। और हमारा कल्ब सुकून और इतमीनान की जैशाल दौलत से मालामाल है।

"दम मदार"

"दम मदार" का नारा मदरिया सिलसिले में जुबान जद खास व आम हैं दम से मुराद मदद हैं और जिससे मदद मांगते हैं वह मदार हैं। यानी हजरत सैय्यद बदी-उद्दीन मदार आम लोगों का इस नारा से हजरत शाह मदार रह० से इमदाद तलब करना होता है। तो यह बिल्कुल इसी तरह हैं। जैसे मुसीबत के वक्त कोई मुसीबत जदह "या अल्लाह" या मुहम्मद या गौस और "या ख्वाजा" कहता है। और "या पंजतन पाक से मदद मांगता है।" इसी तरह "दममदार" से हजरत शाह मदार रह० से मदद

मांगना मुराद है। ख्वास का "दम मदार" कहने से यह मक़सद होता है। कि वह हजरत शाह मदार रह० की तरह तारीकी दूर करके रोशनी फैलायें और वह इश्क़ इलाही में ऐसे सरशार महू मुस्तगरक़ हों कि मज़हर इसआद सफात ख़ुदा वन्द ताआला हो जाये इश्क़ हक़ीक़ी के बाईस हैरत व इस्तगराक़ की हालत में वह "दम मदार" का विर्द करते हैं हजरत को बर्रे सगीर हिन्दुस्तान व पाकिस्तान व बंगला देश में हैयरत अंगेज मक़बूलियत हासिल हुई आप की मक़बूलियत का अन्दाजा इससे लगाया जा सकता है कि "अजमेर में कोकला पहाड़ी पर आपका चिल्ला जियारते गाह खास व आम है। यह पहाड़ी क़रीब सात सौ फ़ीट ऊँची है रास्ता दुश्वार गुज़ार है। लेकिन फिर भी ज़ायरीन आपके फ़यूज व बरकात हासिल करने की गर्ज़ से आपके चिल्ला पर हाजिर होते हैं। वहां एक पुख्ता गुम्बद है। है। और एक पानी का हौज़ है। होज के किनारे हजरत के एक खलीफा मीर जमन जन्नती की एक छत्तरी है।

हजरत का उर्स तो मखनपुर में होता है। लेकिन अज-मेर शरीफ में हर साल जमादी उल अव्वल की अट्ठारह तारीख को एक मेला लगता है। हजरत के चिल्ला पर लोग मन्नतें मानते हैं और नजराने पेश करते हैं।

अजमेर शरीफ से देहली या आगरा रेल से जायें तो पहला स्टेशन जो पड़ता है वह हजरत के नाम पर है यानी

"मदार" इसी तरह से आगरा देहली या आगरा से अजमेर शरीफ जायें तो अजमेर शरीफ से पहले जो स्टेशन पड़ता है वह "मदार" है। मदार के बाद अजमेर गाड़ी पहुँचती है। इस मदार की छोटी सी बस्ती में एक दारूल शफा भी कायम है जो मदार सीनेटोरियम के नाम से मशहूर है यहाँ दूर दूर से मरीज आते हैं।

यहाँ आपरेशन भी होते हैं। हजरत अपनी हियाते जाहिरी में रूहानी बीमारियों का इलाज किया करते थे और आप चिल्ला से करीब जिस्मानी बीमारियों का इलाज होता है। और लोगों के दर्द व तकलीफ को दूर किया जाता है अजमेर शरीफ में एक बाजार का नाम "मदार गेट" है। कई शहरों में आपके नाम पर दरवाजे वगैरा आपकी रूहानी अजमत की यादगार हैं। और तो और औरतें "मदार" साहब के चाँद का बेचैनी से इन्तिजार करती हैं उस महीने को जिसमें आपका उर्स होता है। यानी जमादीउल अव्वल को औरतें "मदार साहब का चाँद" कहती हैं यह आपकी मकबूलियत और अजमत निशां देही के लिए काफी है।

कश्फो करामात

हजरत से बहुत सी करामात जाहिर हुई आपके कश्फो करामात का चार दाग में शोहरा था।

बीबी नसीबा के औलाद

बीबी नसीबा के कोई औलाद नहीं थी जब हजरत बगदाद में रोनक अफरोज हुए तो बीबी नसीबा आपकी खिदमत में हाज़िर हुई और आपसे दुआ की ख्वास्तगार हुई और उनके लिए दुआ की आपकी दुआ से दो लड़के पैदा हुए।

शेख मुहम्मद लाहौरी का मुशहिदह

शेख मुहम्मद लाहौरी को हज करने की तमन्ना दामनगीर थी हजरत को ब जरिए कश्फ से यह बात मालूम हुई।

आपने उनसे फरमाया कि अगर तुम हमारा तवाफ कर लोगे तो तुम्हारा हज हो जायेगा उन्होंने ऐसा ही किया उन्होंने देखा कि हजरत के बजाए खानाए काबा मौजूद है। अब उनको इस ख्याल ने सताया कि वाकयई उनका हज हुआ या नहीं हजरत उनके इस खतरे से आगहा हुए हजरत ने उनको अपनी खिदमत में तलब फरमाया और अपना दस्ते मुबारिक उनके चेहरे पर फेरा हजरत का उनके चेहरे पर हाथ फेरना था कि उन्होंने अपने आपको हिजाज़ में पाया और उन्होंने यह सुना कि हजरत शाह मदार रह० फरमाते हैं कि हज का बक्त आने तक वहीं रहे। पाँच माह वह मक्का में रहे जब हज से फारिग हुए तो अपने को हजरत की खिदमत में हाजिर पाया।

आबे दहन की बरकत

शेख इलियास ने हजरत की खिदमत में आना जाना बन्द किया तो उसके बाद उनके बदन पर सफेद दाग होगए वह इस वर्स के मर्ज से सख्त परेशान थे कि एक दिन परेशानी की हालत में उनको ख्याल आया कि हजरत शाह मदार रह० की नाराजगी की वजह से वह इस बीमारी का शिकार हुए है। वह हजरत की खिदमत में हाजिर होकर माफी के ख्वास्तगार हुए हजरत ने अपने आबे दहन पानी में डाला और इस पानी से उनको गुसल कराया आबे दहन की बरकत से वह अच्छे होगए और बीमारी का कोई असर बाकी नहीं रहा।

बेअदबी की सजा

कादरशाह ने जो हजरत की शान में बे अदबी की तो उसको उसकी सजा भुगतनी पड़ी उसके सारे जिस्म पर आबले होगए जब कादर शाह के पीरो मुरशिद हजरत सिराजउद्दीन सोख्ता ने उनको अपना पैराहन पहनाया तो वह अच्छे होगए।

इताब

हजरत को जब यह मालूम हुआ कि कादर शाह रह० के पीरो मुरशिद हजरत सिराजउद्दीन ने उनको अपना पैरहन पहनाकर उनको आबलों से निजात दिलाई है तो हजरत को

उनकी यह बात नाग्वार गुजरी हजरत ने एक वालहानए अन्दाज में सिराजुद्दीन के मुतअल्लिक फरमाया कि:—

"सिराज चरानसौक्लत" यानि सिराज जला क्यों नहीं हजरत का इतना फरमाया था कि उनके जिस्म में ऐसी सोजिश पैदा हुई कि जिससे वह जांबर न हो सके।

राजा के औलाद

घाटमपुर के राजा के कोई औलाद न थी जब हजरत घाटमपुर पहुँचे तो राजा हजरत से दुआ का तालीब हुआ हजरत की दुआ से राजा के औलाद हुई।

बजु के पानी की बरकत

हजरत जब सूरत पहुँचे तो वहाँ आपने एक शख्स को देखा के उसकी बेनायी जाती रही थी हजरत को इस नबीना पर रहम आया हजरत ने वजू किया और वजु का पानी उस नबीना की आँख पर मला और इसके हक में दुआ की हजरत की दुआ मकबूल हुई और उस नबीना की आँखों में रोशनी आगई।

चश्मा जारी

एक रोज मखनपुर के कयाम के दौरान हजरत ने मुहम्मद यासीन से वजू के लिए पानी लाने को फरमाया वह वजू के लिए पानी की तलाश में निकले लेकिन कही पानी नहीं मिला जब आप मायूस हो गए तो देखा कि पानी का

एक चश्मा बह रहा है वह देखकर खुश हुए और खुशी खुशी इस चश्मा से पानी लेकर हजरत की खिदमत में हाजिर हुए हजरत ने फरमाया कि "यह चश्मा फ्यूज ताकियामे अरजोसमा कायम रहेगा और इससे सैराब व फैजियाब एक आलम होता रहेगा।"

लोह महफूज का नौश्ता

हजरत के तीनों मेअनवी व सूरी फरजन्द सैय्यद मुहम्मद अरगून, सैय्यद अबूतुराब फनसुरी और सैय्यद अबुउल हसन तौफूर शादी करना नहीं चाहते थे हजरत ने उनको अपनी खिदमत में तलब किया और उनसे फरमाया कि आँखें बन्द करो जब उन्होंने आंखें बन्द की तो उनको लोहे महफूज नजर आई जिस पर लिखा हुआ था कि उनकी शादी और इनके औलाद होगी चुनाचिह ऐसा ही हुआ।

बातिनी कुव्वत

हजरत के कश्फो करामात को शेहरा सुनकर पलराये जो कन्नौज के करीब एक कस्बा में रहता था हजरत की खिदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज किया कि हुजूर दुआ कर कि उसको औलाद हो आपकी दुआ से पलराये के एक लड़का हुआ लेकिन बच्चा पैदा हुआ वह गोश्त का लोथड़ा था उसके हाथ पैर नहीं थे पलराये बच्चा लेकर हजरत की खिदमत में हाजिर हुआ और इमदाद का तालीब हुआ

हजरत ने अपनी वातिनी कुव्वत से इस बच्चा को अच्छा किया उसके हाथ पैर नमूदार हुए।

दुआ का असर

एक औरत जिसका नाम रानी मामल था औलाद की आरजू मन्द थी इसने हजरत से अर्ज किया हजरत की दुआ से उसके औलाद हुई।

जुबान की तासीर

एक दिन जो हजरत ने मौलाना हस्सामउद्दीन को "सलामती के लकब से पुकारा तो उस दिन से वह "सलामती के लकब से मशहूर हुए।

अहमद एर्ज इलाज घोड़े पर से गिरे और बेहोश होगए हजरत को जब यह मालूम हुआ तो वह अहमद एर्ज को देखने के लिए तशरीफ ले गये उनको बेहोश देखकर हजरत ने उनसे फरमाया ऐ अहमद एर्ज ! कब तक इस झूठी बेहोशी में पड़े रहोगे उठो और अपने ख्यालाते फासदह से तोबा करो।"

हजरत का इतना फरमाना था कि इनको होश आया उन्होंने आंखें खोली तोबा की और अस्तग फार पढ़ी हजरत इनको एक जर्रह के पास एक गाँव में लेगए इस जर्राह ने हजरत से अर्ज किया कि इनका इलाज मेरे बस का नहीं है। चोटें शदीद हैं बाजाहीर इनके बचने की कोई उम्मीद नहीं है।

हजरत जर्राह के इस कहने से ना उम्मीद नहीं हुए वहाँ अनार के कुछ छिल्के पड़े हुए थे हजरत ने उन छिलकों को पिसवाकर उनके जख्मों पर लगवाया उनको अफाका महसूस हुआ खून बन्द होगया और कुछ ही अर्से में जख्म भर गये और वह बिल्कुल अच्छे होगये।

लूआब दहन की बरकत

काजी महमूद जब हजरत से इस बात पर झगड़ा करने लगे कि उनके मसजिद में आने से पहले उन्होंने (हजरत) नमाज क्यों पढ़ ली और उनका इन्तिजार क्यों नहीं किया तो हजरत ने निहायत नरम लेहजा में उनको बताया कि नमाज़ अव्वल वक्त पढ़ना चाहिए हज़रत ने उनसे फरमाया कि ऐसा मालूम होता है कि तुमने कुरान शरीफ नहीं पढ़ा है। इस पर काजी महमूद और बरानगैख्ता हुए वह कहने लगे कि मैं जो कहता हूँ वह कुरान शरीफ के मुवाफिक होता है। यह सुनकर हजरत ने उनसे कहाकि जरा कुरान शरीफ लाओ जब वह कुरआन शरीफ लाये तो हजरत ने उनसे कुरान शरीफ पढ़ने के लिए फरमाया काजी महमूद ने जो कुरान खोला ताकि वह पढ़ें तो देखा कि इबारत नहीं है वरक सफेद है।

यह देखकर काज़ी महमूद को सख्त तअज्जुब हुआ वह हजरत के हलकए इरादत में दाखिल हुए हजरत ने उनको ब्यैत करने के बाद इनसे फरमाया कि अपने इल्म को

भुला दो उन्होंने अर्ज किया कि इल्म को भुला देना मेरे इख्तियार में नहीं है हजरत ही इस काम को कर सकते हैं हजरत ने उनके मुँह में लुआब दहन डाला जिसके असर से उन पर इल्मे बातिनी के दरवाजे खुल गये।

दोबारह जिन्दगी

सैय्यद जमालउद्दीन जो जमन जन्नती के लकब से मशहूर हुए हजरत की दुआ से पैदा हुए थे एक दिन वह कोठे पर से गिरे उनका इन्तिकाल होगया, हजरत इत्तिफाक से उसी दिन बगदाद वापिस तशरीफ लाये, सैय्यद जमालउद्दीन की वालिदह बीबी नसीबा आपकी खिदमत में हाजिर हुई और आपको खबर जा निकाह की इत्तिला दी हजरत को जब यह मालूम हुआ तो आप बहुत रंजीदह खातिर हुए आपने दुआ फरमाई उनमें सांस आयी वह बहुत अर्से तक जिन्दह रहे।

कश्ती बर आमद

एक सौदागर अपना माल कश्ती में लादकर रवाना हुआ कश्ती अभी थोड़ी ही दूर चली थी कि डूब गई एक शख्स ने देखकर हजरत को इत्तिला की हजरत उस वक्त दरिया के किनारे तशरीफ़ रखते थे आपने एक मुट्ठी खाक उस शख्स को दी और ताकीद फरमाई कि वह इसको दरिया में डाल दे। इस शख्स ने ज्यों ही खाक दरिया में डाली तो डूबी हुई किश्ती ऊपर आयी।

आखिरी अध्याय

हजरत खुश व मुतमइन थे कि जो खिदमत उनके सुपुर्द की गई थी उन्होंने उसको बहुल खूबी अंजाम दिया न शाजगार से दिल बरदाश्ता हुए और न ही सफर की तक-लीफ से तजर दह खातिर हुए अपनी धुन में लगे रहे न उम्मीदी को पास न आने दिया इश्के इलाही को अपना रहबर बनाया और खिदमत खल्क के जजबए अपना रहनुमा और फिर बस्ती-बस्ती, गाँव-गाँव रश्दो हिदायत करने के लिए निकल खड़े हुए एक मुद्दत तक आप सैरो सिदाहत में रहे जहाँ तशरीफ ले जाते वहाँ लोगों को राहे रास्ते पर लाने की कोशिश करते इनको रूहानी अखलाकी बुराइयों से निजात दिलाते और लोगों को तालीम तलकीम के जरिए एक बहतर और आला जिन्दगी गुजारने का फन सिखाते आखिरी वक्त में हजरत ने मखनपुर में जिसको मदारिया सिलसिले के अफराज हारुन्नूर कहते हैं सुकूनत इख्तियार फरमाई मखनपुर में सुकूनत इख्तियार करने का हुक्म रिसालत पनहाँ हजरत मुहम्मद मुस्तुफा स्वल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से मिला था पस आपके लिए इससे वहतरी और रहने के लिए नहीं थी मखनपुर में आपका मसकन बना और मखनपुर ही आपका मदफन है मखनपुर एक गैर मारूफ जगह थी लेकिन आपके कदमों की बरकत से उसको वह मशरफ हासिल हुआ कि

जिस पर वह बाजा तौर पर फखर करता है। मखनपुर में हजरत की आखिरी आरामगाह से जो फ्यूज जारी हुआ वह मदरिया सिलसिले के इस्तहकाम व दवाम का बाईस हुआ हजारों परवाने इस शमा मदारी पर जान व माल कुरबान करने के लिए हमा वक्त आरजूमन्द और तैयार रहते हैं मखनपुर के कयाम के दौरान हजरत ने महसूस किया कि उमर काफी हो चुकी है। जइफी ने कमजोरी ने घेर लिया है। और अब वह वक्त बहुत ही करीब है। जब जुदाई का जमाना खत्म होगा विसाल नसीब होगा पस हजरत मदारिया सिलसिला की तनजीम की तरफ मुतावज्जह हुए।

हजरत जौनपुर में इरफान की दौलत लुटाते हुए और मखनपुर होते हुए लखनऊ में रौनक अफरोज हुए मखनपुर होते हुए लखनऊ में रौनक अफरोज हुए मखनपुर में हजरत के मुरीदेन व मुअतकदीन ने हजरत के आराम के वास्ते एक हुजरा तामीर कर दिया था हजरत इस हुजरा में रहते थे और जिक्रो मुराकबा करते थे हजरत जब लखनऊ होते हुए मखनपुर तशरीफ लाये तो आपने अपने मुरीदेन व खुलफाये ब विकार को तलब फरमाया हर एक को अलैदह अलैदह हुजरे में तलब फरमाकर नैयमते ला ज़वाल से मालामाल किया कुछ को मनसबे खिलाफत अता करके साहिबे मुजाद बनाया बाद अजां हजरत ने हुकम दिया कि सब एक जगह जमा

हो हजरत के हुकम के मुताबिक सब एक जगह जमो हुए हजरत के लिए एक खास जगह तैयार की गई वहाँ हजरत हुजरा से बाहर बैठे-बैठे ही हजरत ने सैय्यद अबू मुहम्मद अरगून, सैय्यद अबू तुराब कन्हूर और सैय्यद अबू उलहसन तौफ़ूर को बुला भेजा वह तीनों हजरत के अजीज सैय्यद अब्दुल्ला हल्वी के साबजादे थे और हजरत ने उनको अपनी सूरी व मनवी फरजन्द में कबूल फरमाया था इसके बाद हजरत ने हाजिरीन से मुखातिब होकर फरमाया।

"यह तीनों भाई जो मेरे सूरी व मअनवी फरजन्द हैं बाद विगरे मेरे जानशीन व सज्जादह नशीन होंगे तुमको इन तीनों फरजन्दों को मेरे बाद मश्ले मेरे तस्व्वुर करो, और उनको मशले मेरे समझो मेरे बाद यह तुम्हारी रहनुमाई करेंगे और तुम्हारी मुश्किलात हल करेंगे मैं तुमको यह हिदायत करता हूँ कि जब तुमको कोई बात मालूम करना हो या कोई मुश्किल दर पैश हो तो उनके पास जाना वह तुम्हारे रहनुमाई और इमदाद करेंगे जिसने उनसे रूगिरदानी की उसने मुझसे रूगिरदानी की और जिसने उनका अहतराम किया इसने मेरा अहतराम किया" इसके बाद हजरत ने हाजरीन से फरमाया।

"फिकर न करो परेशान न हो मेरी रूह हर हालत में तुम्हारी खबर गिरी करती रहेगी जिसने मेरा हाथ पकड़ा मैं उसका हर तरह से इमदाद करता रहूँगा मेरी रूह

क़ियामत तक तुम्हारा अहाता किए रहेगी जैसा कि अब तक तुम्हारी बातिनी बीमारियों का इलाज करता चला आया हूँ इसी तरह से इस दुनिया से चले जाने के बाद करता रहूँगा।

जो मेरे वाबस्ता या मेरे दामने आतफ़त के साये में परिवरिश होने वालों से वाबस्ता होंगे मैंने इनको कबूल किया और उनको सात पुश्तों तक मैंने कबूल किया उनकी शफ़ाअत मेरे जिम्मा होगी और बरोज हशर इनकी शफ़ाअत करूंगा।

हजरत के इस दिल गुज़ार तक़रीर से होजरीन समझ गए कि हजरत को अपने माबूद हकीकी से मुफारकत ग्वार नहीं और हजरत बहुत जल्द शर्बते विसाल पीने वाले हैं कुछ लोग रोने लगे कुछ अज खुद रफ्ता होकर धाड़ें मारने लगे।

हजरत ने सबको सब्र की तलकीन फरमाई और सबकी तसक़ीन कल्बी फरमाई हज़रत ने उनको यह फ़रमाते हुए तसकीन दी कि न तुम पहले से दूर थे और तुमको यकीन दिलाता हूँ कि न आईन्दा मुझ से दूर होंगे।

मैं तुम्हारे करीब था करीब हूँ और करीब रहूँगा इस दिन हजरत ने अपने खास खास खुलफाये को मुखतलिफ मुल्कों शहरों और गाँव में जाने रहने और वहाँ तालीम व तल़क़ीन करने की इजाजत दी हजरत मीर शम्सउद्दीन

हसन अरब को मौजा धरमशाला में रहने की ताकीद फरमाई मीर रुकनउद्दीन हसन अरब को गौजपुर जाने की इजाजत दी मौलाना काजी मुहम्मद मतहर किला शैर को मादर शरीफ में रहने का हुकम दिया मौलाना सैय्यद काजी मुहम्मद और उनके साबजादे काजी मीठे मदार की बूदोबाश के लिए कन्तूर तजवीज फरमाया हजरत सैय्यद जमालउद्दीन को बिहार के एक कस्बा हिलसा में जो जन्नती नगर मशहूर हुआ रहने का हुकम दिया हजरत शाह कंगन के सुपुर्द बीहार किया गया सैय्यद अहमद को कल्वा वन में और शाह जमशैद मियां मुखतार और शाह मुहम्मद झंडा को बदायूं में रहने का हुकम सादर फरमाया हजरत शिया बर्क दिवाना और शाहदाना को बरेली हजरत शाह मजदूब भीका हजरत सैय्यद खासा को बहराइच हजरत सैय्यद मुहम्मद राजे को देहली शाह अल्लाह को नागौर हजरत शाह इलियास को गुजरात और अली शेर मावरूनहारी को मखन-पुर में रहने का हुकम दिया।

हजरत ने अपने तीनों सूरी व मअनवी फरजन्दों यानी हजरत सैय्यद मुहम्मद अरगून हजरत सैय्यद अबूतुराब फन्सूरी और हजरत सैय्यद अबूउल हसन तौफूर के रहने के लिए मखनपुर तजवीज फरमाया हजरत ने उनको हिदायत फरमाई कि वह मखनपुर को अपनी तबलीगी सरगर्मियों

और रिश्दो हिदायत का मरकज बनाये यह हुक्म सादर फरमाने के बाद हजरत ने उनसे दरयाफ्त किया कि अगर वह कहीं और रहना चाहते हो तो बतायें उन्होंने सरे नियाज हजरत के कदमों पर रखकर अर्ज किया कि कि हजरत कुरबत से बहतर और कौनसी जगह हो सकती है।

हजरत की कुरबत जहाँ नसीब हो वही जगह सबसे बहतर है हजरत उनके इस जवाब से बहुत मुतअस्सिर और खुश हुए और बालहानए अन्दाज से हजरत ने उनको अपने सीने से लगाया, उनकी पैशानी को बूसा दिया और उनके सर पर हाथ फेरा।

सफ़रे आखरत

हजरत ने अपने खास-खास खुलफ़ा को खिदमत पर मामुर करके और उनको मुखतलिफ़ मुकामात पर जाने का हुकम सादर फरमा कर मुरीदेन व मुअतक़दीन को अपने विसाल की खबरो दहशत असर से इस तरह मुत्तला किया।

"अल मौत जूहर यूसला अलजेब इला ज़ैब"

यानी मौत एक है जो दोस्त को दोस्त से मिला

देता है । हजरत ने वसीयत फरमायी कि मेरे जनाजह की नमाज मौलाना हस्सामउद्दीन सलामती पढ़ायें ।

हजरत अपने हुजरे में तशरीफ ले गए और दरवाजाह बन्द कर लिया मौलाना हस्सामउद्दीन सलामती उस वक्त जौनपुर में थे उनको बजरिए कश्फ हजरत के विसाल का हाल मालूम हुआ वह फौरन मखनपुर रवाना हुए दरीया को पार किया और मखनपुर पहुँचे वहाँ पहुँचे तो देखा कि बहुत लोग हैं और हजरत के हुजरा का दरवाजाह बन्द है दरवाजह पर दस्तक दी दरवाजा फौरन खुल गया अन्दर दाखिल हुए तो देखा कि हजरत निहलाये कफनाये हुए आराम फरमा रहे हैं ।

जनाजा बाहर लाया गया हजरत की वसीयत के मुताबिक मौलाना हस्सामउद्दीन सलामती ने नमाज जनाजह पढ़ाई बाद अजां हजरत को सुपुर्द खाक किया गया हजरत ने १७ जमादी उल अव्वल सन् ८३८ हि० को ज्वारे रहमत में कदम रखा ।

"साकिन वहश्ते" मादह तारीख विसाल है । विसाल के वक्त हजरत की उम्र तीन सौ छियान्वे साल की थी हजरत के मजार की तामीर की सआदत अली शेर मवरुन-हार के हिस्सा में आयी और इनकी औलाद को इमारत में तौसी करने काशरफ हासिल हुआ ।

मिरासमे उर्स

हजरत का उर्स हर साल निहायत तुजक व एहतिशाम से मखनपुर में होता हैं। उर्स के मौका पर गलाफ पौशी की रसम अदा की जाती है। फातिहा और लंगर के अलावा कुरान ख्वानी भी होती हैं सूरय इखलास पढ़ी जाती है। मीलाद होता है हजरत के जिन्दगी के हालात और हजरत के कश्फ व करामात खर्क आदात और तबलिगी कारनामे ब्यान किये जाते हैं।

कुछ लोग मुरकबा में मशगूल होते हैं मजार के तवाफ को जरूरी समझा जाता है।

—: खत्म शुद्ध :—

मुद्रक—दि प्रिन्टर्स हाउस, फुलट्टी बाजार, आगरा-२

MadaariMedia.Com

पूरे हालात

गरीब नवाज

जिसमें

मय सफ़रनामा मकतुबात ख्वाजा अमल्यात

वजीफे तारीख अजमेर मय

नकशों के दर्ज हैं

मुरतबा–डा० जहुरुल हसन शारिब

नाशिरः—जफ़रउद्दीन बुकसेलर

ड्योढ़ी बेगम, आगरा

Rs. 5-00

MadaariMedia.Com

कामिल सवानेह उमरी

कालियर का

चाँद

इस किताब में हजरत अलाउद्दीन अली अहमद साबिर कलियारी की सवाने हयात और तारीख कलियर मये तालीमात अनोखे अन्दाज में दर्ज किए गए हैं।

मुरतबा—डा० जहुरुल हसन शारिब

पब्लिशर—
जफरउद्दीन बुकसेलर
ड्योढी बेगम आगरा।

Rs. 2-50

मुकम्मिल सवाने उमरी

गुलजारे वारिस

हजरत हाजी सैय्यद वारिस अलीशाह रहमत उल्लाह उल्हे
के हालाते जिन्दगी व करामात अनोखे अन्दाज
से दर्ज़ किये गये है ।

मुरतबा—डा० जहुरुल हसन शारिब

नाशीरः—

जफरउद्दीन खाँ बुकसेलर

ड्योढ़ी बेगम आगरा

Rs. 4-00

MadaariMedia.Com

तज़्किरा औलिया

अज :

डॉ० ज़हुरुल हसन शारिब

नाशिर—

ज़फ़रउद्दीन खाँ बुकसेलर

ड्योढ़ी बेगम, आगरा-३

Rs. 8.00

MadaariMedia.Com

मुकम्मल सवाने उमरी

हजरत सैय्यद मखदूम अशरफ जहाँगीर समनानी रह०

जिसमें हजरत सैय्यद अशरफ जहाँगीर समनानी रह०
की सवाने हयात व करामात मलफूजात और
इरशादात अनोखे अन्दाज़ से
दर्ज किये गये हैं।

अज :—डा० जहूरूल हसन (शारिब)

मिलने का पता :—
जफरउद्दीन खाँ बुक सेलर
ड्योढ़ी बेगम, आगरा—३

कीमत २)५० पैसे

MadaariMedia.Com

हिन्दी में महजबी किताबें

कुरान शरीफ	फाल नामा
पंज सूरह शरीफ	सरताजे आगरा
तजकिरा औलिया	कसासुल अमविया
नूर नामा	करामात गोसपाक
मीलादे अकबर	करामात ख्वाजा
शहादत नामा	तरीका फातिहा
पूरे हालात गरीब नवाज	ताजो बहन
गौसउल आजम	जनाब सययदा की कहानी
तरकीब नमाज	दस बीवीयों की कहानी
अलामात कयामत	मसनून दुआएँ
कलियर का चांद	अहद नामा
गुलजारे वारिस	सुबह का सितारा
अशरफ जहांगीर	दास्तान युसूफ
पूरे हालात शहमदार	जंग नामा हजरत अली
नक्श सुलेमानी	जंग नामा हजरत हनीफ

नोट : ऑर्डर देते वक्त आप अपना पता साफ-साफ लिखें
हर किस्म की किताबें मिलने का पता
शाहनवाज़ खान बुक सेलर, ड्योढ़ी बेगम, आगरा।